मालिनी

(कुछ अनागत सपने)

शाम्भवी प्रजापति

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Shaambhavi Prajapati 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-073-6

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: February 2026

भूमिका -

यह कहानी एक ऐसी लड़की की है जो अपने आप में अद्भुत थी।

"मालिनी" एक पहाड़न लड़की थी जिसे पूर्वाभासी सपने आते थे, जिन्हें अंग्रेज़ी में ***Precognitive dreams*** कहते है। और आश्चर्य की बात यह है कि वे सपने पूर्णतः सत्य होते थे। ये सपने उसे बचपन से ही आते थे। मालिनी के जीवन में कई अलग-अलग मोड़ आते हैं, मालिनी के जीवन में कई कठिनाइयों "से भरा होता है। मेरे द्वारा लिखी गई यह कहानी बताती है कि कैसे हम किसी भी मुश्किल का हल निकाल सकते हैं — शांति और आत्मविश्वास के मजबूत हाथों को पकड़कर, सही मार्ग पर चलकर। यह कहानी बताती है कि कैसे कोई लड़की, एक स्त्री होकर भी, वह सब कुछ करने का साहस रखती है जो वह करना चाहती है।

यह कहानी, नायिका मालिनी के आत्मविश्वासी स्वभाव और साधना को दर्शाती है। इस कहानी में मैंने ईश्वरीय प्रेम और उनके प्रति श्रद्धा तथा विश्वास को उजागर किया है। 'मालिनी' नामक नायिका के माध्यम से यह कहानी एक ऐसी लड़की की है, जो एक मध्यमवर्गीय परिवार से होते हुए भी अपने मन में कुछ बड़ा कर दिखाने की चाह रखती है। जैसे-जैसे आप कहानी को आगे पढ़ते हैं, आपको यह जानने को मिलेगा कि क्या मालिनी की यह चाहत केवल कुछ कर दिखाने की है, या उसके प्रेम की भी कोई भूमिका है। यह रहस्य आपको कहानी पढ़ने के बाद ही पता चलेगा।

-----“मालिनी” ----

एक छह साल की छोटी बच्ची अपनी माँ के पास सो रही थी। अचानक उसकी एक चीख सुनाई दी, वह बच्ची जाग गई थी, वह बिस्तर पर उठकर बैठी। उसका शरीर पूरी तरह पसीने से तरबतर था। वह बहुत तेज़ साँसें ले रही थी और बिस्तर पर काँप रही थी।उसकी माँ, जो पास ही सो रही थी, घबराई हुई उठ बैठी और बच्ची को सहलाते हुए पूछा,

माँ :- मालिनी क्या हुआ बेटा? फिर से कोई बुरा सपना देखा क्या?”

मालिनी ने सिर हिलाया, उसकी आँखों में आँसू थे। माँ ने उसे प्यार से गले लगाया और शांत होने के लिए कहा। लेकिन मालिनी की साँसें अभी भी तेज़ चल रही थीं वह अपनी माँ के गले लगकर रोने लगी।माँ ने उसे शांत कराया। फिर मालिनी ने अपनी माँ को बताया कि उसने एक बहुत ही बुरा सपना देखा था। सपने में जो कुछ भी मालिनी ने देखा, वह सब उसने अपनी माँ को बता दिया।यह सुनकर माँ के चेहरे पर चिंता की गहरी लकीरें उभर आईं। फिर उन्होंने मालिनी को समझाया, “यह तो बस एक सपना है बेटा, सपने सच नहीं होते बेटा।”

लेकिन अगले ही दिन अचानक कश्मीर के वातावरण में बदलाव दिखाई देने लगा। देखते ही देखते मौसम, जो अब तक बहुत सुहावना लग रहा था, ने भयंकर रूप धारण कर लिया। वहाँ बहुत ज़्यादा बारिश होने लगी, जिससे झेलम नदी में पानी का स्तर खतरनाक रूप से बढ़ गया।लोग अपने घर लौटने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन पानी इतना प्रचंड था कि नदी के किनारे बसे कई लोगों के घर तबाह हो गए। इस आपदा में कई लोगों की जानें भी चली गईं। मालिनी की बड़ी बहन, जो स्कूल से लौट रही थी, बस के साथ पानी के तेज़ बहाव में बह गई। इस हादसे में कुछ और बच्चों की जानें भी चली गईं, जिनमें मालिनी की बड़ी बहन भी थी, जो छठवीं कक्षा में पढ़ती थी।इतने लोगों की जान जाने के बाद मालिनी की माँ को आभास हुआ कि यह सब वैसा ही है जैसा मालिनी ने अपने सपने में देखा था। इसका मतलब है कि मालिनी को पूर्वाभासी सपने भी आते हैं, जो कि सच भी होते हैं।

उसकी माँ ने मलिनी को देखा और उसे गले लगा लिया। उन्होंने अपनी एक बेटी खो दी थी — अब वे दूसरी को नहीं खोना चाहते थे।मालिनी के माता-पिता अपनी बड़ी बेटी को खोने के बाद बहुत दुखी थे। वे बेहद असहाय महसूस कर रहे थे क्योंकि उन्होंने उस प्राकृतिक आपदा में अपनी बेटी के साथ-साथ अपना सब कुछ खो दिया था — अपना गाँव, अपना घर, अपनी ज़िंदगी।अब उनके पास न तो कोई ठिकाना था और न ही ऐसी परिस्थिति में कोई सहारा। उन्होंने दूसरे गाँव में आश्रय लिया और हालात सुधरने पर अपने गाँव लौट गए।

सब कुछ अब पहले जैसा नहीं था। उस प्राकृतिक आपदा ने सब कुछ बदल दिया था — सब कुछ बरबाद हो चुका था। पूरा गाँव तबाह हो चुका था। ज़मीन, जहाँ वे खेती करते थे, अब खेती के लायक नहीं रह गई थी। सब कुछ नष्ट हो गया था। यहाँ फिर से जीवन शुरू करना बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य था। लेकिन मालिनी के परिवार की तरह कई लोग वहाँ रुके रहे, क्योंकि वे उस

जगह को छोड़कर नहीं जाना चाहते थे — जहाँ उन्होंने अपना बचपन बिताया था, जहाँ उनकी अनगिनत यादें जुड़ी हुई थीं।

छह साल की छोटी बच्ची मालिनी झेलम नदी के किनारे बैठी थी। वह नदी की तरफ देखते हुए सोच रही थी — अपनी ज़िंदगी के बारे में, कि वह ऐसी क्यों है। कहानी में आगे बढ़ने से पहले मैं अपने पाठकों को यह बताना चाहती हूँ कि आखिर यह कहानी किस विषय पर आधारित है।

मैं इस विषय पर विस्तार से बताना चाहती हूँ।

- **पूर्वसूचक स्वप्न (Precognitive Dreams)** — ऐसे स्वप्न होते हैं जिनमें भविष्य की घटनाओं की झलक मिलती है। इन्हें कुछ लोग भविष्यवाणी मानते हैं, जबकि कुछ का मानना है कि यह अवचेतन मन की प्रक्रिया होती है, जो हमारी भावनाओं और मानसिक स्थितियों से जुड़ी होती है।ये स्वप्न अक्सर किसी आने वाली घटना का संकेत देते हैं — जैसे कि कोई आपदा, दुर्घटना, या भावनाओं और आकांक्षाओं पर आधारित होती है।

- **पूर्वसूचक स्वप्न :-** यह एक ऐसा सपना होता है जिसमें आप भविष्य में होने वाली किसी घटना को पहले ही देख लेते हैं।

- **अवचेतन मन की प्रक्रिया :-** कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे सपने हमारी गहरी इच्छाओं और आशंकाओं की अभिव्यक्ति होते हैं। जब ऐसा सपना भविष्य में सच हो जाता है, तो यह एक भविष्यवाणी जैसा प्रतीत होता है।

इस कहानी की नायिका मालिनी के साथ भी कुछ ऐसा ही होता है, और हम कहानी में हम जानेंगे कि ऐसे पूर्वसूचक सपनों का मालिनी के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

मालिनी एक पहाड़न लड़की है, जो कश्मीर के एक शांत कस्बे में रहती है। उस कस्बे का नाम है वेरीनाग।

मालिनी का व्यक्तित्व :- मालिनी बहुत ही समझदार और संवेदनशील लड़की है। वह अभी 20 वर्ष की है। दिखने में वह अत्यंत सुंदर, आकर्षक और रहस्यमयी है — "उसका चेहरा मानो जैसे मानसरोवर का खिलता हुआ स्वर्णिम कमल सा प्रतीत होता है और उसकी मुस्कान इतनी मोहक है कि उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है।बस इतना समझ लीजिए कि मालिनी की सुंदरता किसी को भी सहज रूप से प्रभावित कर सकती है। और उसका व्यक्तित्व भी कुछ ऐसा ही है।मालिनी बहुत ही चंचल स्वभाव की लड़की है। बस गुस्सा आ जाए तो सब कुछ बिगाड़ देती है, वरना बाकी सब ठीक था ।मालिनी के स्वभाव में दयालुता कूट-कूट कर भरी हुई है।उसे कविताएँ लिखना बहुत पसंद है।मालिनी को कमल के फूल अत्यंत प्रिय हैं और वह अधिकतर शांत और एकांत स्थानों पर रहना पसंद करती है।

मालिनी का परिवार :- यह एक मध्यमवर्गीय परिवार है जिसमें मालिनी, उसके माता-पिता और उसका छोटा भाई रहते हैं।इस कहानी में मालिनी के भाई का नाम सौरभ है।सौरभ 15 साल का है और पास के गाँव के स्कूल में 10वीं कक्षा में पढ़ने जाता है।मालिनी का परिवार एक साधारण मध्यमवर्गीय परिवार है, जिनका जीवन सरल और सामान्य है।वे मुख्यतः खेती करते हैं और इसी से अपनी आजीविका चलाते हैं।

मालिनी हर दिन की तरह ही आज सुबह उठकर शिव मंदिर पहुँची।मंदिर की सफाई करने के बाद भगवान शिव की पूजा-अर्चना की।यह मंदिर एक पुराना मंदिर था जहाँ लोगों का आना-जाना कम ही होता था।शायद मालिनी को यहाँ आना पसंद था क्योंकि उसका जन्म भी इसी मंदिर में हुआ था।उस दिन रात के 2:00 या 2:30 बजे, कादम्बरी को प्रसव पीड़ा शुरू हुई। उस दिन

पौष मास की रात थी। उन्होंने (मालिनी के पिता विश्वेश्वर ने) पास में रहने वाली दाई को बुलाया।

(दाई ने आकर कादम्बरी की स्थिति की जाँच की और मामला गंभीरता से कहाँ)

दाई माँ :- हालात बहुत नाज़ुक हैं। हमें जल्द से जल्द जाना होगा। मामला गंभीर है। अस्पताल ले चलो, वरना बच्चे का बचना मुश्किल है।

विश्वेश्वर :- लेकिन... लेकिन दाई माँ...

दाई माँ :- देखो बेटा! मैं जानती हूँ कि इस बच्चे के लिए तुमने बहुत मन्नतें माँगी थीं। कई मंदिरों में माथा टेका था ताकि तुम्हारा आने वाला बच्चा स्वस्थ और तेजस्वी हो।

(दाई माँ ने विश्वेश्वर के कंधे पर हाथ रखा और कहा:)

भगवान शिव पर विश्वास रखो। उन्होंने तुम्हें शादी के बीस साल बाद उम्मीद की किरण दिखाई है, तो कुछ तो सोचा होगा ना — जो होगा अच्छा ही होगा।

(बाहर बर्फबारी शुरू हो गई थी। विश्वेश्वर ने खिड़की से बाहर देखा और कहा:)

विश्वेश्वर :-दाई माँ! बाहर देखो, भयंकर बर्फबारी हो रही है..."(थोड़ा रुककर चिंतित स्वर में कहा)

"अब मैं क्या करूँ?"

(उसने जैसे-तैसे कहीं से एक हांगा (तांगा) लिया, कादम्बरी को उसमें बैठाया और दाई माँ भी साथ थीं।)

बर्फबारी के कारण रास्ता बहुत ज्यादा जाम हो गया था।चारों ओर बर्फ ही बर्फ थी, जिससे सामने कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।आगे बढ़ पाना मुश्किल हो रहा था।जैसे-तैसे वह एक जगह पहुँचा, जहाँ दूर से कुछ एक चबूतरा दिखाई दे रहा था पास जाकर देखा तो वह एक शिव मंदिर था।उन्होंने वहीं आसरा लिया।

रात भर के संघर्ष के बाद, कादम्बरी ने सुबह 5 बजे, उस प्यारी बच्ची को जन्म दिया। उन्होंने प्यारी बच्ची का नाम मालिनी रखा।

मालिनी इस शिव मंदिर में तब से आती है जब वह बहुत छोटी थी।जब अन्य छोटे बच्चे खेलने में मग्न होते, तब मालिनी यहाँ पास आकर शिव जी के सामने बैठती थी।अपना होमवर्क भी वह यहीं आकर करती थी।मालिनी शिव जी को अपनी सारी बातें बताती थी। जब भी वह खुश होती या दुखी, अपनी हर बात वह शिव जी से ही कहती — वही उसके सबसे प्रिय मित्र थे।

मालिनी मंदिर में पूजा करके घर जा रही थी, रास्ते में पहाड़ी फूलों का बग़ीचा था जहाँ काफ़ी सारे फूल खिले थे। यह बग़ीचा बहुत ही सुंदर था, जहाँ प्यारे-प्यारे पीले रंग के जूही के फूल खिले थे।सुबह का समय बहुत ही सुंदर था। चारों ओर कोहरा फैला हुआ था और जूही के फूलों की खुशबू वातावरण में मखमली सुगंध की तरह घुली हुई थी।हवाओं में एक मधुरता थी, वातावरण में एक शांति थी।बगीचे में बहुत सी रंग-बिरंगी तितलियाँ उड़ रही थीं।सभी तितलियाँ इधर-उधर सरसराती हुई मालिनी के चारों ओर मंडरा रही थीं। मालिनी उन्हें देख रही थी, और उसके चेहरे पर एक चित्ताकर्षक मुस्कान थी।

एक नीले रंग की तितली मालिनी के कंधे पर आकर बैठ गई ।मालिनी ने उसे मुस्कुराकर प्यार से देखा, लेकिन उसने उस प्यारी सी तितली को छूने की कोशिश नहीं की, क्योंकि वह उसे चोट नहीं पहुँचाना चाहती थी। तितली मालिनी के गालों को छूकर निकली, जैसे उसे चूम रही हो। मालिनी को यह

बहुत अच्छा लगा। उसके चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान आ गई, और वह उस तितली को तब तक प्यार से देखती रही जब तक वह उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गई।

मालिनी को वह जगह उसे बहुत पसंद थी। इसलिए वह वहाँ बैठ गई। सुबह की किरणें बगीचे के फूलों पर पड़ रही, जो उनके पीले रंग को सोने के समान दर्शा रही थीं। तभी मालिनी के भाई ने उसे आवाज़ दी। वह 15 साल का था। मालिनी उठी और उसके पास गई।

मालिनी :- क्या हुआ, सौरभ?"

सौरभ :- माँ बुला रही है। और क्या!"

मालिनी :- ठीक है, चलो।"

मालिनी अपने भाई के साथ घर पहुँची। माँ दरवाज़े पर ही खड़ी थीं। उन्होंने मालिनी को देखते ही कहा । **कादम्बरी (मालिनी की माँ) :-** दिन भर बस यहाँ से वहाँ काम करते रहना,कभी शिव मंदिर जाना, कभी तितलियों के पीछे भागना, कभी पेड़ के नीचे बैठकर पेन और कॉपी लेकर कविताएँ लिखना — बस यही, और कुछ आता है ।

मालिनी :- माँ!

माँ :- क्या माँ ? कभी घर के काम भी कर लिया करो। (मालिनी का भाई सौरभ उस पर हँसने लगा क्योंकि उसे डाँट पड़ी थी। मालिनी ने उसे घूर कर देखा, और वह चला गया।)

मालिनी :- बताइए माँ, क्या काम करना है?"

माँ :- अब ये भी बताना पड़ेगा? ठीक है, केसर के खेतों में जाकर बाबा की मदद करो। मैं भी आ रही हूँ, यहाँ थोड़ा काम निपटा लूँ फिर आती हूँ।"

मालिनी :- ठीक है माँ।

मालिनी वहाँ से चली गई जहाँ उसके बाबा काम कर रहे थे।केसर के खेत में केसर के फूल हल्के लैवेंडर रंग के तथा गहरे बैंगनी रंग के थे, और के।उनकी वर्तिका (कलंक) लाल - नारंगी रंग के थे । पास ही के खेत में एक दुर्लभ पूजनीय केसर के सफेद रंग के फूल उगे हुए थे।उन पर धूप पड़ रही थी, और दृश्य अत्यंत मनोरम प्रतीत हो रहा था।

मालिनी यह दृश्य देखती रह गई। तभी उसकी माँ खेत में आई और कहा :-

माँ :- सरसों के फूलों को ताड़ना हो गया हो तो अब थोड़ा काम भी कर, (मालिनी की माँ और बाबा दोनों हँसने लगे।)

मालिनी भी अपने माँ-बाबा की मदद करने लगी।वे केसर के वर्तिकाग्र (कलंक) को निकालकर इकट्ठा कर रहे थे।अभी अक्टूबर का आख़िरी सप्ताह चल रहा था —अक्टूबर के अंत से लेकर नवंबर तक केसर निकाले जाते हैं।

"फिर इसके बाद सरसों की बुवाई होती है। कश्मीर में सरसों की खेती को सरकार भी बढ़ावा दे रही है। आजकल कश्मीर में सरसों की खेती बढ़ रही है। यह सामान्य जानकारी है जो मालिनी के पिता मालिनी को बता रहे थे। केसर की खेती के बाद उन्होंने सरसों की फसल लगाई।

कुछ महीनों बाद...

पीले सरसों के पीले-पीले फूल निकल आए थे।यह फरवरी का महीना था — बसंत ऋतु की शुरुआत, जब हवाओं में सरसों की ठंडी और मनमोहक खुशबू चारों दिशाओं में फैली हुई थी।

मालिनी खेत के किनारे बैठी थी, सरसों के फूलों को निहार रही थी। उसके हाथ में एक डायरी और पेन था। वह कल्पना की दुनिया में खोई हुई थी।

उसने एक-एक फूल और पत्तियों को ध्यान से देखा, गौर किया और कल्पना करने लगी। — ये सरसों के फूल कितने सुंदर हैं। सूरज की रोशनी उन पर पड़ रही थी, जो उन्हें सुनहरी और चमकीली प्रतीत कर रही थी।पीले-पीले सरसों के फूलों से भरे उस खेत में,चारों तरफ उसने अपनी नजरें घुमाईं —और फिर सोचा, और लिखना शुरू किया।

मालिनी ने एक कविता लिखी :-

कितने सुंदर हैं ये सरसों के फूल,

जब लहराते हैं ये खेत में,

सर-सर हवा चलती है जैसे रात में

ये सरसों के पौधे नई-नवेली

दुल्हन, और सोने ज़ेवर है

उनके पीले सरसों के फूल।

खेतों को भी नाज़ है इन पर,

इठलाते हैं ये इस बात पर कि

मेरी ही उपजाऊ मिट्टी के कारण

सीधी तनकर खड़ी हैं ये।

मेरे ही खेतों के पानी से तो

बढ़ी हैं ये

और यहाँ उगी सरसों का पौधा

है मेरी ही मेहरबानी ये

इस बात पर सरसों बोली

तुम्हारे खेत पर तो कंद-मूल भी उग जाते हैं, वे थोड़ी न सुंदर हुआ करते हैं।

देखो कितनी मनमोहक हूँ मैं

और मेरे सरसों के फूल।।

मालिनी अपने कल्पना की दुनिया में मालिनी अपने आप में खोई हुई थी, कि तभी उसे किसी ने आवाज दी। वह सौरभ ही था।

सौरभ :- चलो मालिनी दीदी, जल्दी करो!"

मालिनी :- "कहाँ?" (मालिनी उठकर खड़ी हो गई)

सौरभ :- हम बड़े बाजार जा रहे हैं।"

मालिनी (हँसते हुए) :- बड़ा बाजार? उसे कहते हैं मेला, बुद्धू!"

सौरभ :- हाँ वही! बाबा भी साथ चल रहे हैं। अब जल्दी चलो, वो इंतज़ार कर रहे हैं।

उन्होंने कहा है कि अगर देर हुई तो नहीं जाएँगे। (सौरभ की आवाज़ में खुशी और मेले में जाने की उत्सुकता साफ झलक रही थी) ।

मालिनी :- (मुस्कुराते हुए बोली) "ठीक है, चलो।"

उन्होंने साथ में बातें करते हुए घर की ओर कदम बढ़ाया।मेले दूर पहुँचने पर पाया कि बाबा जाने के लिए बिल्कुल तैयार खड़े थे — बस मालिनी का इंतज़ार कर रहे थे।मालिनी कुछ देर में तैयार होकर आई और फिर वे सभी मेले के लिए निकल गए।मेले में कई तरह-तरह की चीज़ें थीं, जैसे कि सभी मेलों में होती हैं।यह मेला बसंत के मौसम में लगा था,इसलिए वहाँ काफी

सारे रंग-बिरंगे फूलों की दुकानें भी थीं।अलग-अलग तरह की चीज़े और झूले भी थे।

सौरभ को झूला झूलने में बहुत मज़ा आ रहा था, जबकि मालिनी को यह सब पसंद नहीं आ रहा था। उसने अपने लिए एक पेन लिया, जो बिल्कुल एक हंस (स्वान) के आकार जैसा था। मेले में तरह-तरह की और काफी चीज़ें थीं। मालिनी को एक चीज़ बहुत पसंद आई, तो उसने वह खरीद ली। उसने अपनी माँ के लिए मल्टीकलर की चूड़ियाँ भी खरीदीं। उन्होंने मेले में खूब मज़ा किया। लेबी और कैंडी फ्लॉस खाई, जो मालिनी को बहुत पसंद थी। मेले में मज़े करने के बाद वे सभी अपने घर लौट आए।सौरभ लगातार मेले की बातें करता रहा —मेले के झूले, खिलौने और सबसे ज़्यादा मिठाइयों के बारे में। घर आकर जो चूड़ियाँ मालिनी ने मेले में खरीदी थीं, वह उसने अपनी माँ को दीं — जो उन्हें बहुत पसंद आईं।

अगले दिन मालिनी सुबह उठ कर आज भी हर रोज की तरह जूही के फूलों के बगिचे में पहुँची, शिवजी के लिए फूल चुनने के लिए। इस बगीचे के पास ही वह शिव मंदिर था। जैसा कि आपने शुरुआत में जाना था, यह शिव मंदिर एक खंडहर था — जहाँ केवल मालिनी ही पूजा करने जाती थी। लेकिन आज कुछ अलग होने वाला था।

जब वह फूल तोड़ रही थी, तभी मंदिर से घंटी बजने की आवाज आई। मालिनी चौंकी। उसने देखा कि कोई मंदिर में पूजा कर रहा था। उस आवाज ने उसका ध्यान खींच लिया। वह उस दिशा में मुड़ गई — शिव मंदिर की ओर, जहाँ से वह आवाज आ रही थी।

मालिनी ने सोचा :- यह क्या है! यहाँ तो कोई नहीं आता। आज पहली बार ऐसा हुआ है कि मेरे अलावा किसी और ने मंदिर में आकर घंटी बजाई। यह सच में बहुत ही अजीब और अलग बात है।"

मालिनी ने अपने कदम धीरे-धीरे मंदिर की ओर बढ़ाए। उसकी उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। जितना वह आगे बढ़ रही थी, उतनी ही तीव्रता से जानने की इच्छा जाग रही थी कि "आख़िर कौन है वहाँ?"

मालिनी के मन में कई सवाल उमड़ने लगे—

"क्या स्वयं महादेव आए हैं?

क्या मंदिर में कोई है?

नहीं... ऐसा कैसे हो सकता है?

और... है वो ?"

मालिनी सोचते-सोचते मंदिर की सीढ़ियों के पास पहुँची और उसके मन में उत्सुकता और जिज्ञासा और बढ़ गई थी । मंदिर की सीढ़ि पर कदम रखते ही मालिनी कुछ अजीब-सा आभास हुआ। सीने में एक अनजानी हलचल थी — पता नहीं क्या, पर कुछ तो था जो उसे समझ नहीं आ रहा था। उधर मंदिर में एक लड़का था जो शिवजी की पूजा कर रहा था। घंटी उसी ने बजाई थी। उसे भी वैसा ही एहसास हुआ जैसा मालिनी को — लग रहा था जैसे दिल ने पहली बार धड़कना शुरू किया हो। इतनी तेज़ी से धड़क रहा था मानो कोई मैराथन दौड़ रहा हो उसके भीतर। दिल की चाल आज पहली बार कुछ अलग, बहुत ही अलग लग रही थी। हवाओं के चलने से मंदिर की घंटियाँ बजने लगीं। हवाओं में जूही के फूलों की खुशबू घुल गई थी।

मालिनी वहाँ खड़ी थी एकदम स्तब्ध होकर वह उसे देखे जा रही थी। वह लड़का भी मालिनी को ही देख रहा था। मालिनी को देखते ही उसकी आँखों में चमक आ गई और आँखें फैल गईं। मालिनी की सुंदरता को देखकर उसका मुँह कुछ देर के लिए खुला का खुला रह गया। दोनों एक-दूसरे के

आमने-सामने खड़े, बस एक-दूसरे को निहारते रहे। मालिनी की आँखों में देखते ही उसके दिल में फिर से कुछ महसूस हुआ।

मालिनी ने आखिरकार खामोशी तोड़ी और उस लड़के से पूछ ही लिया।

मालिनी :- कौन हो तुम?" उस लड़के ने मुस्कुराकर मालिनी को देखते हुए कहा

ओमकार राज सिंह।"

मालिनी :- राज सिंह? मतलब जमींदार के रिश्तेदार हो?" "जी नहीं "जमींदार राज सिंह मेरे पिता हैं।"

मालिनी ने उसकी बात सुनकर उसे थोड़ा गुस्से से देखा और कहा —

"क्या करने आए हो?"

ओमकारा :- (एक कदम आगे बढ़ते हुए) "लोग यहाँ मंदिर में क्या करने आते हैं?"

मालिनी :-लोग जो भी करने आते हों, तुम यहाँ क्यों हो? क्या करने आए हो इस मंदिर में?"

ओमकारा :- वही... शिव जी की पूजा करने, जो आप करने आई हैं।"

मालिनी :- लेकिन यहाँ कोई भी नहीं आता।"

ओमकारा :- लेकिन आप तो यहाँ आई हैं।"

मालिनी :- मेरे अलावा कोई और नहीं आता।"

ओमकारा :- क्यों? क्या यह मंदिर आपका है?"

मालिनी :- यह मंदिर खंडहर हो चुका है, देख नहीं रहे?"

ओमकारा :- तो क्या यह मंदिर आपके पूर्वजों का है?"

(मालिनी ने ओमकारा को गुस्से से देखा और कहा):

मालिनी: - जो नहीं। लेकिन मेरी जानकारी में आज से पहले कभी भी मेरे अलावा कोई नहीं आया।

ओमकारा: - तो य हाँ कोई भी नहीं आता, तो आप यहाँ क्यों आती हैं?

(मालिनी ने उसे घूर कर देखा और कहा) –

शिव मंदिर हैं तो शिव पूजा के लिए ही आऊंगी

ओमकारा: - (शक की नजरों से देखते हुए लेकिन मुस्कुरा कर कहा) : गाँव में शिव मंदिर की कमी है क्या, जो इस खंडहर में इतनी सुबह-सुबह आपको शिव पूजा के लिए आना पड़ा?

मालिनी :- नहीं।

ओमकारा :- तो फिर यहाँ आने का कारण बताओ।"

(ओमकारा मालिनी के पास जाकर उसे सवाल भरी नज़रों से देखता है)

मालिनी :- (गुस्से से), मेरी मरज़ी है! पूजा करने मैं जहाँ चाहूँ वहाँ जाऊँ। तुम्हें इससे क्या?"

ओमकारा :- मुझे यह जानना है कि आप ऐसी जगह — इस खंडहर में — क्यों आती हैं?"

मालिनी :- (गुस्से से), नहीं बताऊँगी।"

ओमकारा :- कोई बात नहीं।" (वह मालिनी के पास आकर उसके कानों में कहता है)

"मैं पता लगा लूँगा… अपने तरीके से।"

(मालिनी की धड़कन तेज हो गई जब ओंकारा की साँसें उसके कान पर महसूस हुईं, मालिनी एकदम पीछे हट गई) ओमकारा ने उसे एक गहरी नज़र से देखा और मुस्कुराकर वहाँ से चला गया। मालिनी वहीं खड़ी रही, मानो उसके पैर ज़मीन में धँस गए हों। उसने ओमकारा को जाते हुए मुड़कर नहीं देखा। ओमकारा के जाने के बाद, मालिनी वहीं शिव जी की मूर्ति के पास बैठ गई और उनसे बहुत सारी बातें कीं।

मालिनी थोड़ी असमंजस में थी, उसे लेकर थोड़ी परेशान भी। उसने शिव जी से अपनी बात कही: "ये सब क्या था? शिव जी, वह ज़मींदार का बेटा यहाँ क्यों आया था? आज से पहले कभी नहीं आया था?"

"ये वही ज़मींदार का कम आय वाला बेटा था, है ना शिव जी? आज से पहले तो कभी यहाँ नहीं आया था।

थोड़ा रुक कर कहाँ - हाँ ठीक है, वो अभी तक शहर में ही रहता है, पढ़ाई पूरी करने के लिए। लेकिन फिर भी उसके यहाँ आने का कोई कारण समझ नहीं आया शिव जी ।

(उसने थोड़ा सोचा और कहा) - एक मिनट... क्या वो इसी वजह से यहाँ आया है था?

हो सकता है... शायद वही ज़मींदार का बेटा है। उसके यहाँ आने का और कोई कारण नहीं हो सकता।"

वह इस मंदिर को केवल एक खंडहर समझकर इसे तोड़ने की योजना बना रहा है। मुझे एहसास तब हुआ जब वह अचानक मेरे पास आया। उसकी चाल और उसके पिता की बातें... कुछ अजीब सा लगा शिव जी। जिसने मेरे बाबूजी की ज़मीन छीनी थी, वही आदमी अब आपके इस मंदिर पर नज़र डाल रहा है।

मैं संकल्प लेती हूँ, शिव जी — मैं ऐसा नहीं होने दूँगी। मेरे होते हुए आपके इस मंदिर की एक भी ईंट कोई नहीं ले सकता। जब तक आप मेरे साथ हैं, इस मंदिर को कोई नहीं छीन सकता। ये मेरा वादा है शिव जी। जैसे हर बार आपने मेरा साथ दिया है, इस बार भी दीजिएगा।" (मालिनी ने हाथ जोड़कर कहा) "आशीर्वाद दीजिए।" (फिर मालिनी कुछ देर तक वहीं मंदिर में बैठी रही। फिर उसने कहा:) "मुझे जाना होगा शिव जी... हाँ, वरना माँ फिर से नाराज़ हो जाएँगी। आप अपना ख़याल रखना।"

मालिनी घर आ गई। उसने मंदिर में हुई घटना के बारे में किसी से कुछ नहीं कहा, क्योंकि वह इस बारे में पहले ही बात कर चुकी थी। हालाँकि आज वह परेशान थी, लेकिन उसने अपनी परेशानी जाहिर नहीं होने दी।हर रोज की तरह उसने माँ-बाबा के साथ खेतों के कामों में मदद की। शाम को मालिनी फिर उसी शिव मंदिर में गई। वहाँ जाकर जब उसने शिव जी को निहारते हुए शांति महसूस की, तो घर लौट आई। घर पहुँचते ही उसने देखा कि वहाँ कई मेहमान आए हुए थे। मालिनी ने अंदर जाकर देखा तो वही ज़मींदार का बेटा और उसके चमचे आकर सोफ़े पर ऐसे बैठे थे मानो यह घर उनके बाप का ही हो। मालिनी की नज़र ओंकारा पर पड़ी। उसने उसे गुस्से से देखा। इससे पहले कि मालिनी कुछ कहती, उसकी माँ ने कहा:

माँ :- मालिनी, ये ओंकारा है — ज़मींदार का बेटा। वही जो तुम्हारा बचपन का दोस्त था। विलायत से पढ़कर आया है। तुमसे मिलने आया है यहाँ।"

मालिनी :- (गुस्से से ओंकारा को देखती है) "ये मेरा दोस्त नहीं था।"

"ओंकारा ने मालिनी को एक रहस्यमयी मुस्कान दी "

माँ :- तुम दोनों एक ही स्कूल में थे…"

मालिनी :- (गुस्से से) "एक ही स्कूल में पढ़ने से कोई दोस्त नहीं हो जाता, माँ। वो मुझसे दो कक्षा आगे पढ़ता था। तो हम दोस्त नहीं थे आगे से इस आदमी को मेरा दोस्त मत कहिए।"

(मालिनी गुस्से में अपने कमरे में चली गई और दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया।)

माँ :- (ओंकारा से) "तुम बुरा मत मानना बेटा। तुम्हें पता ही होगा, वो शुरू से ही थोड़ी ज़िद्दी है।"

ओंकारा :- "नहीं माँ जी, वो बहुत प्यारी है। काफी सालों बाद उसने मुझे देखा, शायद पहचान नहीं पाई। अब शायद मुझे फिर से दोस्ती की शुरुआत करनी होगी। अभी के लिए मुझे चलना चाहिए।"

(उसे रोकते हुए मालिनी की माँ ने कहा:)

माँ :- नहीं बेटा! तुम ऐसे कैसे जा सकते हो? तुम इतने सालों बाद हमारे घर आए हो, कुछ तो खा कर जाओ।"

ओंकारा :- ठीक है माँ जी। "अब आप इतना कह रही हैं तो एक कप चाय पिला दीजिए… मालिनी के हाथ की।"

माँ :- (मुस्कुराते हुए) ज़रूर बेटा। तुम बैठो, मैं अभी मालिनी को चाय बनाने को कहती हूँ।"

(उन्होंने मालिनी के कमरे के पास जाकर देखा। दरवाज़ा अंदर से बंद था।)

माँ :- मालिनी, दरवाज़ा खोलो।"

मालिनी :- नहीं।"

माँ :- देखो बेटा, वो हमारा मेहमान है। और मेहमान तो भगवान का रूप होते हैं।

क्या तुम भगवान का अपमान करना चाहती हो?"

मालिनी :- माँ! वो शैतान है, भगवान नहीं। आपको पता है..." (मालिनी को माँ ने बीच में ही रोक दिया)

माँ :- बस! बहुत हो गया मालिनी। चुपचाप दरवाज़ा खोलो।" (मालिनी ने दरवाज़ा खोला और कमरे से बाहर आई)

मालिनी :- क्या चाहिए आपके भगवान को?"

माँ :- उसके लिए चाय बना दो।"

मालिनी :- अगर मैंने नहीं बनाई तो?"

माँ :- तो मैं तुम्हारे बाबा से कहूँगी कि तुम्हारी शादी करा दो और अगर तुम ऐसा नहीं चाहती, तो तुम्हें पता है क्या करना है।"

मालिनी :- आप मेरी माँ नहीं हैं अगर आप ऐसा कह सकती हैं।"

माँ :- मैं ये तुम्हारी भलाई के लिए कह रही हूँ बेटा। ओंकारा ज़मींदार का बेटा है। तुम्हें उसका सम्मान करना चाहिए। अब तुम रसोई में जाकर अच्छी सी चाय बनाओ। तुम उसका ध्यान रखना, मैं खेतों में जा रही हूँ।

मालिनी :- ऐसा मत करिए माँ…"

माँ :- जितना कहा है, उतना करो। (मालिनी माँ को वहीं छोड़कर खेतों की ओर चली गई, जहाँ उसके बाबा काम कर रहे थे)

मालिनी ने खद से कहा—'अच्छी-सी चाय ज़रूर पिलाऊँगी, ऐसी चाय जो जीवन में कभी नहीं पी होगी, आपके भगवान ने।

(मालिनी ने देखा कि हॉल में ओंकारा अपने कुछ चमचों के साथ बैठा था। वह एक सैतानी मुस्कान के साथ रसोई में आया। मालिनी ने सोचा:) "ऐसा क्या डालूँ चाय में जो सबसे अलग हो… जिसे पीकर उसे…" "गोबर? नहीं, ये ज़्यादा हो जाएगा। तो फिर नमक या मिर्ची? हाँ, ये ठीक रहेगा।"

(मालिनी ने चाय बनाने की शुरुआत ही की थी कि अचानक ओंकारा किचन में आ गया।

उसने मालिनी के कान के पास झुककर धीरे से कहा:)

ओंकारा :- ज़हर मिलाने की सोच रही हो?" (मालिनी ने चौंककर देखा — ओंकारा उसके पीछे खड़ा था, बहुत करीब)

मालिनी :- (हड़बड़ाते हुए) "नहीं… नहीं तो।"

ओंकारा :- तो फिर ठीक है। मालिनी के बगल में खड़े होकर उसने कहा — चीनी दो चम्मच।"

(मालिनी ने उसे घूरते हुए देखा और चाय में पूरा एक कप शक्कर डाल दिया।)

ओंकारा :- (गहरी, धीमी नज़र से देखते हुए मुस्कुराकर), डायबिटीज़ से मारना चाहती हो क्या?

इतनी चीनी… पर इतनी भी नहीं चलेगी।"

मालिनी :- (गुस्से से) "हाथ से चाय पीनी थी ना? तो लो, ये रही — पियो और निकलो यहाँ से!" (ओंकारा ने मालिनी को गौर से देखा और शांत स्वर में कहा:)

ओंकारा :- मैं तुमसे दो साल बड़ा हूँ। अपने सीनियर से ऐसे बात करते हैं?"

(मालिनी ने उसे गुस्से से देखा, मगर कुछ कहा नहीं।)

(ओंकारा ने चाय के कप को उठाया और एक सिप ली।)

ओंकारा :- यह बहुत मीठी है।" (उसने कप नीचे रख दिया और कहा:) चाय का कप वापस ले जाओ। दूसरी चाय बनाओ — और हाँ, इस बार कम चीनी डालना।"

मालिनी :- मैं नहीं बनाऊँगी।"

ओंकारा :- मुझे लगता है तुम्हारी माँ को फिर से बुलाना पड़ेगा।" (मालिनी ने कुछ कहे बिना बर्तन उठाए। उसने बहुत बार गहरी साँस ली, लेकिन अंततः चाय बनाना शुरू कर दिया।)

(ओंकारा ने चाय पी कर देखा… वह मालिनी को कुछ देर तक देखता रहा और फिर उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई। मालिनी को इस सब पर गुस्सा आ रहा था)

ओंकारा :- तुम्हें चाय बनाना नहीं आता।"

(उसने खुद ही एक बर्तन में पानी डाला और गैस ऑन की। जब पानी उबलने लगा, उसने उसमें लौंग, शहद, अदरक और इलायची डाली। उन्हें कुछ देर उबालने के बाद उसने उसमें चाय पत्ती डाली और दो मिनट तक उबाला। फिर दूध डाला और अंत में गैस बंद कर दी। चीनी मिलाई और चाय कप में डाल दी।)

(मालिनी यह सब देख रही थी। ओंकारा का यह पक्ष कहीं न कहीं उसे चौंका रहा था। ओंकारा ने चाय का कप मालिनी की ओर बढ़ाया।)

मालिनी :- "मुझे नहीं पीनी, तुम ही पियो। चाय पीने के लिए तो बड़े मरे जा रहे थे न!

(ओंकारा मुस्कुराया और सिर हिलाया। चाय का कप उठाया, एक सिप ली और जल्दी से खत्म कर दिया। फिर उसने चाय का खाली कप मालिनी के हाथ में थमा दिया। हल्की मुस्कान के साथ वह किचन से बाहर चला गया। अपने आदमियों के साथ वहाँ से निकल गया।)

(मालिनी हाथ में वही खाली कप लिए खड़ी-खड़ी उसे जाते हुए बस देखती रही…)

अगले दिन जब मालिनी सो रही थी सो रही थी, जब मालिनी को उसकी माँ ने उठाते हुए कहा:

माँ :- रात में नींद नहीं आई क्या? अभी तक सो रही हो? आज मंदिर नहीं जाना तुम्हें?

उठो बेटा, सुबह के आठ बज चुके हैं।"

"यह बात सुनकर कि सुबह के आठ बज गए हैं, मालिनी को कोई हैरानी नहीं हुई, क्योंकि वह अभी सुबह छह बजे ही सोई थी। रात भर वह ओंकारा के बारे में ही सोचती रही—वह मंडी में क्यों गया था, हमारे घर क्यों आया था। उसका मन कुछ और कह रहा था, और दिल कुछ और महसूस कर रहा था। लेकिन वह खुद भी नहीं समझ पा रही थी कि सब कुछ क्यों हो रहा है।

कुछ दिन बाद…

मालिनी ने फिर से ओंकारा को मंदिर में देखा। वह शिव जी के सामने हाथ जोड़कर खड़ा था।

उसकी आँखें बंद थीं। मालिनी ने गौर किया — वह कितना शांत, कितना सुंदर लग रहा था।"उसके चेहरे पर जैसे ठहर-सी गई थी। उसने पहली बार ओंकारा को इतना ध्यान से देखा था।

ओंकारा की आँखें बंद थीं, फिर भी उसकी भौंहों की हरकत ने बता दिया कि वह जानता है — मालिनी उसे देख रही है। मालिनी यह बात समझ गई, लेकिन उसने अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया। ओंकारा ने आँखें खोलीं और ऐसे देखा, जैसे उसे मालिनी के वहाँ होने की उम्मीद ही नहीं थी। जबकि सच्चाई यह थी — वह वहाँ सिर्फ मालिनी के लिए ही आया था।

ओंकारा :- तुम यहाँ?"

मालिनी :- "ये सवाल तो मुझे आपसे करना चाहिए। मैं तो यहाँ रोज़ ही आती हूँ, लेकिन आप यहाँ क्यों हैं? इतने दिनों में कुछ बदला था क्या? आपने ध्यान दिया—ओंकारा का 'आप' 'तुम' में बदल गया था और मालिनी का 'तुम' 'आप' में। (ओंकारा ने मुस्कुराकर कहा)

ओंकारा :- लगता है, सीनियर की इज़्ज़त करना अब आ ही गया है… अच्छा है।"

(मालिनी कुछ देर तक उसे देखती रही, फिर बिना कुछ कहे शिव जी की पूजा में लग गई।

जब मालिनी ने कलश से भगवान शिव को जल चढ़ाना शुरू किया, ओंकारा उसके पास आकर खड़ा हो गया और चुपचाप कलश पर हाथ रख दिया।)

(मालिनी ने उसे आश्चर्य से देखा, लेकिन कुछ नहीं कहा। शायद उसे यह एक साथ जलाभिषेक करना अच्छा भी लगा — जैसे किसी दांपत्य की छाया हो।)

(पूजा समाप्त होने के बाद भी ओंकारा मालिनी को देखता रहा। मालिनी ने नज़रें नीचे कर लीं, लेकिन उसे आभास हो गया था कि ओंकारा की नज़रें उस पर टिकी हुई हैं —

जैसे उसकी आँखें बर्फ में जम गई हों।)

(मालिनी को यह एहसास हुआ कि ओंकारा की नज़रें अब वैसी नहीं रहीं जैसी पहले थीं।

उनमें कुछ और था — कुछ ऐसा जो उसने पहले कभी नहीं देखा था…)

मालिनी :- एक बात पूछूँ?"

ओंकारा :- (मुस्कुराकर) हाँ, पूछो न।"

मालिनी :- आप तोड़ना चाहते हैं इस मंदिर को? क्यों?"

ओंकारा :- क्या? मैंने तुमसे कब कहा कि मैं इस मंदिर को तोड़ना चाहता हूँ?"

मालिनी :- तो फिर…?"

ओंकारा :- तुम्हें लगता है मैं यहाँ मंदिर तोड़ने का प्लान बनाने आया हूँ? मैं इतना भी बुरा नहीं हूँ, मालिनी।"

(यह पहली बार था जब ओंकारा ने मालिनी का नाम उसके सामने लिया। मालिनी के दिल में कुछ हलचल सी हुई, लेकिन उसने उस एहसास को नज़रअंदाज़ करते हुए शक की निगाह से देखा और कहा:)

मालिनी :- आप यहाँ क्यों आए हैं, इसका कोई ठोस कारण है? साफ-साफ बताइए।"

ओंकारा :- तुम। वो कारण तुम ही हो।"

मालिनी :- (चौंकते हुए) मैं? मैं समझी नहीं…"

ओंकारा :- समझने की ज़रूरत नहीं। मैं बस तुमसे दोस्ती करना चाहता हूँ।"
(मालिनी ने उसे शक की नज़र से देखा…)

"सिर्फ दोस्त?"

मालिनी :- नहीं

ओमकारा :- क्यों नहीं?

मालिनी :- क्योंकि आप मंदिर को तोड़ना चाहते हैं। (ओमकारा ने बीच में ही थोड़े गुस्से से कहा)

ओमकारा :- मैंने कुछ नहीं किया, मैं मंदिर नहीं तोड़ना चाहता।

मालिनी :- तो फिर यहाँ क्यों आते हो जब मैं यहाँ नहीं होती?

ओमकारा :- मैं यहाँ सिर्फ तुम्हारा इंतज़ार करता हूँ।

मालिनी :- पर क्यों?

ओमकारा :- क्योंकि मैं तुमसे दोस्ती करना चाहता हूँ।

मालिनी :- लेकिन

ओमकारा :- कोई लेकिन नहीं। बस हाँ या नहीं — यही जवाब होगा। दोस्ती करोगी न?

(मालिनी ने कुछ नहीं कहा। उसने फिर पूछा)

ओमकारा :- क्या सोच रही हो, हाँ कहोगी?

मालिनी :- नहीं

ओमकारा :- क्यों?

मालिनी :- क्योंकि आपके पिता, राज सिंह ने ज़मींदार बनकर मेरे बाबा की ज़मीन हड़प ली। वह ज़मीन कभी वापस नहीं की और हमेशा अन्याय ही करते रहे।

ओमकारा :- हाँ, उन्होंने गलत किया, लेकिन इसमें मेरी क्या गलती है?

मालिनी :- मुझे आपसे दोस्ती नहीं करनी, बस।

ओमकारा :- क्योंकि मैं ज़मींदार का बेटा हूँ? अगर लौटा दूँ तो? तुम्हारे बाबा की ज़मीन वापस कर दूँ, तब तो मुझसे दोस्ती करोगी?

मालिनी :- नहीं।

ओमकारा :- लेकिन क्यों ?

मालिनी :- क्योंकि धोखेबाज़ी आपके खून में ही और मुझे आप पर भरोसा नहीं।

ओमकारा मालिनी के शब्द सुनकर रह गया। मालिनी ने उसे गुस्से भरी नज़रों से देखा और फिर चली गई। ओमकारा वहाँ मंदिर की सीढ़ी के पास खड़ा-खड़ा उसे जाते हुए देखता रहा।

एक शाम मालिनी अपने कमरे की बालकनी में बैठी थी। उसके मन में कुछ चल रहा था। उसने सूरज को देखा, असमान को निहारती हुई अपनी डायरी खोली।

कितना कुछ समेटे हुए हो

तुम अपने में, अवनीका

सम्पूर्ण तारामंडल,

सभी ग्रहों का बंडल

जगमगाता है सूरज,

तुमसे ही तो रोशन है निशाराज ।

तुम में ही तो बैकुंठ का समय,

ब्रह्मलोक को दिया सहारा।

तुम पर टिके हैं बादल सारे,

तुम्हारे सहारे ही तो यह

धरती पर पानी बरसाते।

तुम पर ही मेरे मन को भाने

वाला इंद्रधनुष अपने

सात रंग लिए खड़ा है।

तुमने इन सबको आश्रय दिया है,

देखो, तुम्हारा हृदय कितना बड़ा है

अवनी का वजूद भी

तुमसे ही है,

तुम्हारे वर्षा-जाल से ही तो

यह हरी है।

तुम्हारे इसी प्रेम की वजह से ही

तो स्थिर खड़ी है

धरती है अवनी

और तुम आकाश हो, अवनीका।"

एक शाम मालिनी को देखने आया। एक बड़ी नीली गाड़ी में से बॉडीगार्ड बाहर आया और उसमें एक लम्बा-चौड़ा आदमी बाहर आया — यह ज़मींदार के भाई का बेटा था, अर्थात् ओंकार का भाई महेन्द्र सिंह। महेन्द्र

सिंह को मालिनी की ख़ूबसूरती पसंद थी। इसलिए वह मालिनी को अपना बनाना चाहता था।

मालिनी को उनके माता-पिता ने भीतर बैठाया और इस बारे में मालिनी से पूछा। मालिनी ने इस पर स्पष्ट इनकार कर दिया। उसने कहा कि उसे शादी नहीं करनी ऐसे आदमी से जिसके खून में ही बेईमानी हो। मालिनी ने उन्हें बाहर निकलने को कहा और कहा कि उनके शरीर से धोखेबाज़ी की बू आती है। वह लड़का वहाँ से चला गया, लेकिन उसने ठान लिया कि इस अपमान का बदला लेगा।

कुछ दिन बाद ख़बर आई कि उनके खेत की फ़सलें बर्बाद कर दी गई हैं। अनाज जो तैयार हो चुका था, उसमें पूरा खेत पानी से भर गया। पूरा खेत जलमग्न हो गया और अनाज की फ़सलें पानी में पूरी तरह नष्ट हो गए थे।

फ़सलें नष्ट होकर खेत में भरे पानी की सतह पर तैर रहे थे। यह सब महेन्द्र का काम था। मालिनी के बाबा ने यह सब देखकर अपना सिर पकड़ लिया। मालिनी की माँ रोने लगीं। उन पर पहले से बहुत करज़ था। सौरभ की पढ़ाई और मालिनी की शादी के लिए गहने बनवाने थे, लेकिन अब सब कुछ समाप्त हो चुका था। मालिनी के बाबा ने कहा —"ये फसलें नहीं, हमारी किस्मत है, जो बर्बाद होकर पानी में तैर रही हैं।" मालिनी का परिवार एक मध्यमवर्गीय परिवार था। वे बहुत दुखी थे क्योंकि उनकी आय का एकमात्र स्रोत खेती थी, और वह भी पूरी तरह बर्बाद हो गया था। अचानक मालिनी के बाबा के सीने में दर्द होने लगा। उन्होंने अपने सीने पर हाथ रखा। उनकी आँखों में आँसू थे।

उन्हें हार्ट अटैक आया था। वे ज़मीन पर गिरने वाले थे। मालिनी ने भाग कर उनके पास जाकर उन्हें सहारा दिया सौरभ उनके हाथ पैर मलने लगा। उन्होंने

सामने से मदद माँगी, लेकिन कोई भी इंसान ज़मींदारों से उलझना नहीं चाहता था।

मालिनी के बाबा को ले जाने के लिए कोई साधन नहीं था। उनके पास अब करें तो करें क्या? मालिनी ने शिव जी से प्रार्थना की कि वे किसी तरह उनकी मदद करें।

फिर वहाँ एक गाड़ी आई। उसमें से एक नौजवान बाहर आया। उसने सफेद रंग का वस्त्र पहन रखा था। उसके चेहरे पर सूरज की किरणें पड़ रही थीं। उसका चमकता चेहरा देखकर ऐसा लग रहा था मानो कोई देवदूत सामने खड़ा हो। सूरज की रोशनी से निकलकर वह सामने था। यह ओंकार का ही था।

मालिनी ने उसे देखा और गुस्से से सुनाने लगी। उसने कहा कि यह सब मिला हुआ है। लेकिन ओमकारा ने उसे शांत करते हुए कहा कि वह उसकी मदद करना चाहता है। मालिनी ने पहले तो मना कर दिया क्योंकि वह ऐसे आदमी की मदद नहीं लेना चाहती थी। जो ख़ुद इन सब के ज़िम्मेदार लोगों में से ही था।

ओंकार ने उसे अपनी बातों से यक़ीन दिलाया कि वह उन लोगों के साथ नहीं है और वह मालिनी के परिवार को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता। फिर भी मालिनी को उस पर विश्वास नहीं था। लेकिन अपने पिता की हालत देखकर उसने ओमकारा की मदद लेनी पड़ी। ओंकारा ने कहा—'मैं तुम्हारा भरोसा कभी नहीं तोड़ूँगा।' मालिनी ने उसकी बात मान ली, और ओंकारा ने उसे धन्यवाद दिया। डॉक्टरों ने उनका इलाज शुरू किया, लेकिन डॉक्टर ने कहा कि उन्हें अस्पताल में ही कुछ दिन रहना पड़ेगा। चिंता और तनाव से दूर, उन्हें मुक्त माहौल में रहना चाहिए।

रात को मालिनी अपने बाबा के पास ही रुकी। उसने अपनी माँ और भाई को घर भेज दिया। सौरभ को समझाया कि वह माँ का ध्यान रखे, और यहाँ बाबा का ध्यान रखने के लिए वह पर्याप्त है।

सौरभ माँ के साथ घर आ गया। माँ ने उसे खाना खिलाया और रात में माँ को नींद नहीं आ रही थी, तो सौरभ उनके पास ही बैठ गया। इधर मालिनी अस्पताल में अकेली बैठी थी। किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा। उसने सिर उठाकर देखा — वह ओमकारा था। मालिनी के चेहरे पर चिंता और परेशानी देखकर उसने कहा, मालिनी को दिलासा दिया कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। उसने अपना हाथ मालिनी के कंधे से हटाया और मालिनी ने उसे देखा। मालिनी की आँखों में आँसू थे। यह सब देखकर ओमकारा के दिल में दर्द हुआ। उसने मालिनी का हाथ पकड़कर "हल्का-सा दबाया और हल्की, गहरी आवाज़ में बस एक ही वाक्य मालिनी की आँखों में देखते हुए — **"मैं हूँ न।"**

यह वाक्य सुनते ही मालिनी की आँखों से आँसू फूट पड़े। मालिनी ने ऐसा पहली बार सुना था, या कहें कि किसी ने उससे ऐसा पहली बार कहा था। वो चाहती थी कि वह ओमकारा को गले लगाकर जोर से रोए, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया — आँसू स्वयं ही थम गए और उसने अपनी बनावटी सख्त आवाज़ में कहा, "मैं ठीक हूँ।" ओमकारा ने उसके दिल की बात समझ ली। उसके होठों पर एक हल्की मुस्कान दिखाई दी।

अचानक मालिनी की आँख खुली और उसने खुद को अपने घर की उसी बालकनी में बैठा पाया। कविता लिखते-लिखते उसकी आँख लग गई थी। मालिनी की साँसें बहुत तेज चल रही थीं। "मालिनी के चेहरे पर चिंता की लकीर आई, उसने सोचा — "तो इसका मतलब यह सपना था।" रहस्यमयी मालिनी ने सोचा — अब क्या घटना घटने वाली है? क्या इसे रोकने की

ज़रूरत है? लेकिन क्या ? क्या मैं इसे रोक पाऊँगी या वैसे ही होगा जैसा देखा है? हाँ, सब कुछ वैसा ही जैसा मैंने बचपन से सपनों में देखा है। तो इस बार भी यही होगा। लेकिन अगर ऐसा हुआ तो बहुत बुरा होगा। मुझे इसे रोकना ही होगा। लेकिन कैसे?

मालिनी उस सपने को लेकर परेशान थी। उसके मन में बहुत-बहुत से ख्याल आ रहे थे। आधा मतलब यह था कि परेशानी उसी के भीतर चल रही है। उसका निवारण ढूँढने के लिए सबसे पहले उसे शांत होना होगा। भोर में यह कैसे सम्भव है? तीन चीज़ों से मालिनी के मन को शांति मिलती है — कविताएँ लिखना, शिव मंदिर में शिव जी के पास जाकर बैठना और बातें करना। मालिनी ने गहरी साँस ली और तय किया कि वह शिव जी के पास जाएगी, क्योंकि गुरु ही एक हैं जो उसे समाधान बता सकते हैं या सुझा सकते हैं।

मालिनी अपने घर से निकली। शाम हो चुकी थी, डूबते हुए सूर्य की सरगर्मी से सभी दिशाओं में लालिमा फैल रही थी। मालिनी मंदिर के पास पहुँची। सुनहरी किरणें शिवलिंग, पर पड़ रही थीं जो कि वास्तविक रूप से काफी सुंदर और मनमोहक लग रहा था, उससे मालिनी के मन में थोड़ी शांति आई। उसके चेहरे पर व्याकुलता साफ़ दिखाई दे रही थी। उसने गहरी साँस ली और मंदिर में जाकर भगवान शिव के सामने बैठ गई। अब उसने सोचा कि महादेव से पूछे कि उसे क्या करना चाहिए। मालिनी श्रद्धा से बैठी रही। तभी शिवलिंग के पास एक कमल का फूल आकर गिरा। मालिनी ने उसे अपने हाथों में उठाया और सोचा...

यह कैसा संकेत हो सकता है? फिर उसने विचार किया कि कमल का फूल अति शुभ संकेत है — मानो भगवान शिव कहना चाहते हों कि सब सही होगा। भगवान शिव की बात समझकर मालिनी खुशी के मारे उनके पास गई

और उसने श्रद्धा से शिवलिंग को गले लगा लिया, शिव जी को धन्यवाद कहा। फिर वह मंदिर में बैठ गई और सोचने लगी कि शिव जी ने कहा है सब अच्छा होगा, लेकिन कैसे होगा? सब मुझे ही करना होगा। लेकिन यह सपना मालिनी को बचपन से आता रहा है। क्योंकि हमेशा यही सपने उसने देखे हैं। सब सच हुआ है, और इस तरह सब कुछ घटित हो रहा है।

मालिनी ने सोचा — "तो फिर मुझे सपने के उस परिणाम को बदलना होगा।" वह सोचने लगी कि यह विचार कितना अजीब है, लेकिन सच यह है कि अचानक होने वाली घटनाओं को वह रोक नहीं सकती। हाँ, इतना ज़रूर कर सकती है कि प्रभावशाली होकर होने वाले नुकसान को कम कर दे। मालिनी ने सोचा कि वह पैसे कमाएगी और अपने पिता की मदद करेगी। यह सोचकर उसने गहरी साँस ली और शिव जी को देखकर मुस्कुराकर धन्यवाद कहा — "इतना अच्छा सुझाव देने के लिए।" कमल का फूल, जो शिव जी ने संकेत के रूप में मालिनी को दिया था, उसे मालिनी ने अपने साथ ले लिया। गर्मी और श्रद्धा से भरे मन के साथ वह उस फूल को घर ले गई और भवन के पास सुरक्षित रख दिया। फिर उसने अपने बाबा से बात की कि वह उनकी मदद करना चाहती है। उसने कहा कि उसे पैसे कमाने हैं ताकि अपने परिवार को अच्छी जीवन दे सके। मालिनी ने बाबा से कहा, तो बाबा ने उत्तर दिया — "ठीक है! यह बहुत अच्छी बात है। तुम खेतों और बागानी में हमारी मदद कर सकती हो।" बाबा ने बताया कि खेती जैसी चीज़ों से हटकर कुछ अलग करना भी ज़रूरी है। जब बाबा ने मालिनी से पूछा, तो उसने कहा कि वह बिज़नेस करना चाहती है। बाबा ने उसे आश्चर्य से देखा और इन सब के लिए स्वतंत्रता देने की बात कही। उन्होंने कहा — "दिन भर यहाँ से वहाँ, इधर-उधर बेवजह लड़कों की तरह घूमने के वजह से ही , तुम्हें घर से बाहर जाने देने का असर है ये ही, यह तुम्हें पता नहीं। लड़कियाँ यह सब नहीं करतीं — मालिनी ने उन्हें समझाने की कोशिश की कि अब जमाना बदल गया है।

लड़कियाँ भी वही सब कर सकती हैं जो एक लड़के को करने का अधिकार है। लेकिन बाबा ने साफ़ मना कर दिया। उन्होंने कहा कि खानदान की शोभा तभी रहती है जब वह चार दीवारों की मर्यादा रूपी सीमाओं से घिरी रहे और अपने संस्कारों को समझे, मर्यादा की रेखा को न लांघे। मालिनी ने अपने बाबा को बहुत समझाने की कोशिश की, लेकिन वे नहीं माने। बल्कि उन्होंने मालिनी की शादी करने का फैसला कर लिया।

अगले दिन मालिनी को देखने के लिए लड़के वाले आए। लेकिन यहाँ सिर्फ लड़का ही आया था। अपने आदमियों के साथ वह एक बड़ी, लंबी कार से बाहर निकला। मालिनी अपनी कमरे की बालकनी से यह सब देख रही थी। वैसा ही था जैसा मालिनी ने अपने सपने में देखा था। मालिनी ने सोचा अगर शादी के लिए कहा जाएगा तो वह मना कर देगी, क्योंकि वह शादी नहीं करना चाहती थी। उस ज़मींदार के भाई के बेटे महेन्द्र से तो बिल्कुल भी नहीं, क्योंकि आपको पता है कि मालिनी को ज़मींदार के ख़ानदान से ही नफ़रत थी, उनके द्वारा ज़मीन छीन लिए जाने पर भी भले ही उसके बाबा ने उन्हें माफ कर दिया था, लेकिन मालिनी उन्हें माफ नहीं करना चाहती थी।

लेकिन वह मना भी नहीं कर सकती थी, क्योंकि उसे इसका परिणाम पता था । मालिनी ने महेन्द्र से कहा कि वह इस बारे में सोचकर बताएगी। शाम को मालिनी इस बारे में सोच रही थी वही झेलम शिव मंदिर था, नदी के किनारे। इस बार मालिनी मंदिर में नहीं, नदी के पास बैठी थी। ओंकारा शिव मंदिर में आया मालिनी के लिए , लेकिन मालिनी वहाँ नहीं थी। ओंमकलश की नज़र झरने के पास बैठी मालिनी पर पड़ी। मालिनी अकेली बैठी थी। उसके पास जाकर वह बाजू में बैठ गया। मालिनी अपने ख़यालों में खोई हुई थी, उसे पता भी नहीं चला कि ओमकारा आकर उसके पास बैठा। उन्हें महेन्द्र ने दुर्भाग्य से साथ बैठे देख लिया।

महेन्द्र गुस्से से भरकर वहाँ से चला गया और घर आकर उसने तय किया मालिनी ने उसके साथ धोखा दिया। इसका जवाब वह मालिनी को देगा। उसने मन ही मन ठान लिया कि वह मालिनी से सब कुछ छीन लेगा। इधर मालिनी अपने ख़यालों से बाहर आयी और उसने ओंकारा को अपने पास बैठे हुए देखा। एक पल के लिए उसकी नज़रें ओंकार पर ठहर गईं, लेकिन फिर वह अचानक उससे दूर हो गई और बिना कुछ कहे वहाँ से जाने लगी। ओमकारा ने उसका हाथ पकड़कर उसे रोका और कहा— 'क्यों जा रही हो? मालिनी ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया, अपना हाथ छुड़ाया और वहाँ से चली गई।

अगले दिन सुबह खबर आयी कि मालिनी के बाबा के खेतों की फसलें बरबाद हो गई हैं। ठीक उसी तरह, जैसा कि मालिनी ने सपने में देखा था, वैसा ही हुआ। सब कुछ बिल्कुल पूर्णतः स्वप्न के अनुसार घटित हो रहा था। मालिनी अपने बाबा के पास ही थी। अस्पताल में बाबा के पास जो शख्स मौजूद था, वह कोई और नहीं बल्कि ओंकारा ही था—जैसा कि मालिनी ने सपने में देखा था। वहाँ अस्पताल में बाबा के पास मालिनी की नींद टूट गई। आप जानते हैं कि मालिनी जब सोती है तो उसे कई विशेष सपने आते हैं।

तो जब मालिनी सो रही थी, कुछ अलग चीज़ दिखी—वही शिव मंदिर कुछ अलग लग रहा था। पूरा मंदिर सुनहरी किरणों से नहाया हुआ था। मंदिर पर पड़ रही धूप से ऐसा लग रहा था जैसे वह स्वर्ण से बना हो। मंदिर के चारों ओर पानी था। उस पानी में प्रतीक स्वरूप स्वर्णिम कमल खिला था—बहुत सुंदर और अति मनोरम। यह नज़ारा वास्तव में अद्भुत प्रतीत हुआ जब मंदिर में स्थापित शिवलिंग के दर्शन हुए। आख़िरकार मालिनी की आँखें खुल चुकी थीं। सब कुछ सपना था, पर एक सच जैसा अनुभव उसे बाहर ले आया। इतना होने के बाद भी मालिनी के चेहरे पर मुस्कान लौट आई।हालाँकि वह अंदर से बाबा के इलाज को लेकर परेशान थी।

झेलम नदी के किनारे स्थित उस मंदिर को देखकर मालिनी को अपना सपना पुनः याद आ गया।

वह बैठ गई और शिव मंदिर के दृश्य को उस सुंदर कैनवास पर उतारने लगी। उसने बहुत ही खूबसूरती से उस दृश्य को चित्रित किया—चारों ओर मंदिर, जिसके केंद्र में सुनहरी आभा थी। बीच में शिवलिंग किसी तरह आशा का प्रतीक प्रतीत हो रहा था, मानो एक मजबूत और चमकता हुआ अस्तित्व केवल भगवान शिव ही हों। यह चित्र मन को शांति प्रदान करते हैं नदी के पानी में दिखाई दे रहे स्वर्णिम कमल के फूलों से कैनवास लगभग पूरा हो गया था। मालिनी ने नम पर बनी पेंटिंग को गौर से देखा।उसे लगा कि यह अब पूर्ण हो चुकी है, कहीं कोई कमी नहीं रही।

तभी झेलम नदी के पास से गुजर रहा एक पर्यटक वहाँ आया। उसने मालिनी के पास जाकर उसकी बनाई पेंटिंग देखी और कहने लगा— कश्मीर के इस शहर वेरीनाग की खूबसूरती है झेलम नदी और उसके किनारे बसा यह शिव मंदिर (उसने मालिनी को देखते हुए कहा) लेकिन उससे भी अधिक खूबसूरत है यह कैनवास। इसकी सुंदरता ने दृश्य को और भी निखार दिया। कैनवास पर उकेरी गई यह छवि वास्तव में अत्यंत मनमोहक थी।

मालिनी ने उसे देखा और बहुत ही मासूमियत से कहा: "यह तो शायरी है

उस पर्यटक ने मुस्कुराकर जवाब दिया, "नहीं, यह तो आपकी ही तारीफ़ है।

फिर उस पर्यटक ने अपना परिचय देते हुए कहा – "मेरा नाम प्रवीन है, मैं एक लोक कलाकार (Folk Artist) हूँ।" उसने मालिनी को बताया कि लोक कलाकार वे होते हैं जो पारंपरिक लोक कलाओं को बनाए रखते हैं और उनका प्रदर्शन करते हैं। ये कलाकार किसी समुदाय या क्षेत्र की पहचान से जुड़े होते हैं। उस लोक कलाकार ने मालिनी को समझाया कि उनकी इस धुन को बनाने में सहायता कर लोग अपनी संस्कृति को जीवित रख सकते हैं।

मालिनी ने कहा कि यह पेंटिंग बिकाऊ नहीं है। लोक कलाकार प्रवीन के पूछने पर मालिनी ने बताया कि वह इसे बेचना नहीं चाहती। प्रवीन ने मालिनी को समझाया कि इस पेंटिंग की अच्छी-खासी कीमत मिल सकती है। तभी मालिनी को याद आया कि उसके बाबा के इलाज के लिए पैसे चाहिए थे। हालाँकि वह यह पेंटिंग बेचना नहीं चाहती थी, लेकिन मजबूरी में उसने "हाँ" कह दिया। मालिनी ने पेंटिंग पर अपना हस्ताक्षर किया और फिर उसने वह पेंटिंग लोक कलाकार को दे दी। उस कलाकार को मालिनी की पेंटिंग बहुत पसंद आई क्योंकि वह इतनी जीवंत लग रहा था।

इसके लिए उसने मालिनी को 50,000 का एक चेक दिया। मालिनी ने उन पैसों से बाबा का इलाज कराया और इन सब के लिए उस पर्यटक का धन्यवाद किया और शिव जी का भी। मालिनी अच्छा महसूस कर रही थी क्योंकि अब सब कुछ ठीक हो रहा था।कई सारी एक से बढ़कर एक पेंटिंग बनाई और उन्हें बेचकर उसने अपने भाई के स्कूल की फीस भरी।अब तक सब कुछ सही चल रहा था । मालिनी के बाबा को समझ आया कि अगर लड़कियाँ चाहें तो कुछ भी कर सकती हैं। वे परिवार को एक बेटे की तरह चला सकती हैं।

मालिनी अपने कमरे से निकलकर पहाड़ों की सुबह की धूप सिर पर लिए, सरगर्मी में गई। जून की हवाएँ बह रही थीं। वह एक पेड़ की छाँव में बैठ गई। और अपनी कल्पनाओं की दुनिया में खो गई। मतलब, वह कविताएँ लिखने लगी। पता नहीं कैसे-कैसे विचार उसके मन में आ रहे थे। मालिनी बस अपने विचारों को कविता के माध्यम से अपनी डायरी में लिखती जा रही थी। उसकी डायरी में चुनिंदा कविताएँ संकलित हो रही थीं, जो कि कुछ इस प्रकार थीं ।

*** मेरा मन ***

कितना चंचल है, मेरा मन

कभी चाहता है चिड़ियों के साथ

सुर-से-सुर मिलाऊँ,

उनके साथ चहचहाऊँ।

कभी यह चाहता है

अपने विचारों को चित्रों के द्वारा व्यक्त करना,

जो भी मन में है उन्हें

कागज़ पर रंगों के माध्यम से दर्शाना।

कभी यह चाहता है कि मैं शायर बन जाऊँ,

कभी कविताएँ करना चाहता है,

तो कभी यह चाहता है

कहानियाँ लिखूँ, लेखक बन जाऊँ।

और कभी सब कुछ भूलकर,

उड़जाऊँ में तितली बनकर,

बादलों के साथ खेलूँ

और बस वहीं-कहीं रह जाऊँ।

इन्द्रधनुष के सात रंगों के संग,

रहूँ मैं भी कोई आठवाँ रंग बन।

ना जाने क्या-क्या चाहतें हैं ये मेरा मन।।

*** कल्पना ***

मैं करना चाहती हूँ कल्पना,

कुछ ऐसी जिसे पढ़कर लगे अपना।

जो मन में भरे एक सपना –

पत्ते, नदी, पहाड़, झरना, फूल-पत्ते, इन सबसे परे,

कुछ अलग सा।

मैं करना चाहती हूँ कल्पना।

मन की गहराई में सारी दुनिया की मार्मिकता को भूलकर

मैं करना चाहती हूँ कल्पना।

इस संसार की हलचल को ठुकराकर,

सपनों को अपनाकर,

मैं करना चाहती हूँ कल्पना।।

*** सपना ***

हर कोई सपना देखता है

कोई सपने में अपना देखता है,

कोई अपने में सपना देखता है।

सपना है एक अवचेतन मन का

विचार इस मन से उस मन तक का संचार

भविष्य की घटनाओं को दिखाता

है मुझे सपना।

किसी महत्वपूर्ण घटना को बताता है

मुझे सपना।

कभी आसान तो कभी - कभी बहुत

कठिन हो जाता है इनको समझ पाना।

अपने आप में एक

रहस्य एक सपना।।

पापा

ऊँगली पकड़कर हमें सिखाया

था चलना अपने बचपन में

गोद में बिठाकर

खिलाया था आपने।

अपनी ज़रूरतों का ख़याल नहीं रखा,

हमारी ख़्वाहिशों को पूरा करते रहे हैं।

सोचते रहते बस हमारी ही

खुशियों के बारे में।

हमारे भविष्य के बारे में

हमें दुलारते, प्यार जताते,

मन प्रसन्न कि चीज़ें दिलवाते।

मन में मेरे कोई प्रश्न हो तो उनसे

पूछने से सब हल हो जाते।

हमें सदैव ही अच्छी बातें

सिखाते।

कहते हमसे — "मेरे बच्चे, अच्छे-अच्छे

काम करो तुम, जग में अपना नाम करो।"

हमसे बहुत प्यार करते हैं पापा।

ईश्वर ने भेजा है उन्हें मेरे लिए

बनाकर , उन्हें सबसे प्यारे पापा ।

पूरी दुनिया में सबसे अच्छे हैं मेरे पापा।

मेरी माँ

कितनी प्यारी है मेरी माँ,

कितनी सरल, कितनी निश्छल।

उनके मन में सबके लिए प्यार है,

वो सबको करती हैं दुलार।।

उनके मन में किसी के लिए

कोई मलाल नहीं है।

सारे दुख-दर्द सहतीं,

पर किसी से कोई सवाल नहीं है।

बड़े ही प्यार से वो मेरे

बालों को सँवारतीं,

वो इतनी सहज कैसे हैं?

ये सोच में उन्हें निहारती

गलतियाँ हमारी करती माफ सारी

माँ, तुम आखिर इतनी प्यारी ?

माँ, तुम्हारा प्यार समंदर से भी गहरा है।

मुश्किल में भी जो सुकून दे, वो तुम्हारा

चेहरा है।

गलतियों पर प्यार से समझातीं

दूर जाने पर बहुत याद आतीं

जिसकी हर "हाँ" में है मेरी हाँ

वही तो है मेरी माँ।।

आँखें

हमारे अंतर मन का

आईना होती हैं आँखें।

जो लफ़्ज़ों से नहीं कहा जा सकता

उन्हें कह जाती हैं आँखें।।

मनुष्य के हृदय का

हाल बताती हैं आँखें।

व्यक्ति के दुख में आँसू बहाकर,

और वही सुख में आँखों में

प्रसन्नता की चमक लाकर,

उनके मन के भाव को बताती हैं आँखें।

अगर कोई व्यक्ति झूठ बोले तो,

नज़रें चुराकर,

यदि सत्य बोले तो आँख से आँख

मिलाकर और

अगर किसी के मन में किसी के

के प्रति प्रेम हो, तो उसके समक्ष

झुकाकर दिल का हाल बयाँ

करती हैं आँखें।

बोलने का काम तो अधरों का है,

पर बिना बोले भी सब कुछ कह

जाती हैं — आँखें॥

मालिनी अभी भी उसी पेड़ के नीचे बैठी थी और तभी उसे एक *विजन* (vision) आया। — एक धीमी सी लेकिन गहरी प्रभात-शाली खुशबू। मालिनी को लगा मानो वह बगीचे में है, जहाँ एक अत्यंत सुगंध लेकिन बहुत ही हल्की सी खुशबू चारों ओर फैली हुई है। वहाँ बगीचे में कई अलग-अलग

तरह के, अलग-अलग रंगों के फूल खिले हुए थे, जिनकी महक सभी दिशाओं में फैल रही थी। यह दृश्य वास्तव में मनोहर था—अति सुंदर दृश्य, मानो कोई दूसरी दुनिया हो। ऐसा लग रहा था मानों सपनों की दुनिया हो। मालिनी ने सोचा—यह कैसा दृश्य है? क्या यह भी कोई संकेत है?अब इस *विजन* का क्या अर्थ है?

मालिनी ने सोचा अब शाम हो चुकी है, घर जाना चाहिए। घर जाते समय के रास्ते में सोच रही थी - इतनी मनमोहक खुशबू थी कि मन ठहर-सा गया। अगर यह सत्य होता तो? यह खुशबू सच में अद्भुत और पवित्र थी। ऐसी सुगंध सभी के दिलों में होनी चाहिए। मालिनी इस विषय में सोच ही रही थी। उसके मन की ओर चलते हुए एक खयाल आया कि उसे यही करना चाहिए— एक ऐसी शुद्ध और मनमोहक सुगंध जो उपयोगी भी हो और पसंद भी आए। भोर की पूजा-पाठ से लेकर लोगों की निजी ज़रूरतों में भी और अलग-अलग तरह की सुगंध लोगों को पसंद भी आती है। घर पहुँचते-पहुँचते उसने तय कर लिया था कि वह एक प्राकृतिक परफ़्यूम का व्यवसाय करेगी। मालिनी ने इतने अच्छे विचार के लिए मन ही मन शिव जी का ध्यान करते हुए उन्हें धन्यवाद कहा।

उसने बाबा को इस बारे में अभी के लिए कुछ नहीं बताया क्योंकि उसे पिछली बार की बात याद थी। इसलिए उसने सोचा कि इस बार बाबा को कहने के बजाय करके दिखाना है। उसने काफी सोचने के बाद तय किया कि वह सबसे पहले कमल के फूल का इत्र बनाएगी। लेकिन उसे यह सब नहीं आता था। वह सोचने लगी—यह सब कैसे होगा? मुझे तो चाय बनाना तक नहीं आता, परफ़्यूम कैसे बनाऊँगी।

मालिनी ने आस-पास के लोगों से जानकारी एकत्र की, लेकिन किसी ने भी सही सुझाव नहीं दिया। किसी ने मालिनी ने बड़े बुज़ुर्ग लोगों से इस विषय पर

चर्चा की, परन्तु यह तय पाया कि परफ़्यूम कैसे बनाया जाता, इस बारे में किसी को भी अनुभव या जानकारी नहीं थी कि इसका व्यवसाय कैसे करें।

एक हफ़्ता गुज़र गया था अभी तक मालिनी को कोई रास्ता ही न सूझा। उसने जितना आसान सोचा, उतना ही कठिन निकला। उसने सोचा कि अब कम से कम वह अपनी परेशानी दूर करने के लिए कुछ करेगी। मालिनी बहुत परेशान थी, पर उसने ठान लिया कि कुछ करने वाली थी।

ज़ाहिर है कि मालिनी शिव मंदिर ही जाने वाली थी, क्योंकि जब भी वह परेशान होती है, यही करती है। जब मालिनी शिव मंदिर में शिव जी से अपनी परेशानियों के बारे में बता रही थी, तब वहाँ ओंकारा खड़ा- खड़ा सब कुछ सुन रहा था। सुनकर वह वहीं पर ठहर गया। यह बात मालिनी को पता नहीं थी। मालिनी अपनी समस्याओं को लेकर बहुत परेशान थी और शिव जी के ध्यान में व्यस्त थी। तभी सामने ओंकारा मालिनी के पास आकर खड़ा हुआ।

मालिनी ने उसे देखते ही पूछा - आप यहाँ क्यों हैं? ओंकारा ने जवाब दिया—'तुम्हारे सवालों का उत्तर मैं दे सकता हूँ। मैं बता सकता हूँ कि व्यवसाय कैसे करता है। इस बारे में मुझे पूरी जानकारी है। मैंने व्यावसायिक विषयों पर अध्ययन किया है। अगर तुम चाहो तो हम साथ मिलकर काम कर सकते हैं और मैं तुम्हारी मदद करूँगा। लेकिन मालिनी ने उसकी मदद लेने से साफ़ मना कर दिया। और फिर जैसे ही मालिनी वहाँ से जाने लगी, उसके सामने ओंकारा आकर खड़ा हो गया और उसे रोक लिया। उसने कहा - इसका जवाब आपको पता है।

हाँ, क्योंकि मैं ज़मींदार का बेटा हूँ, जिसने तुम्हारे पिता जी की ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लिया था। ओंकारा ने कहा: "क्या सिर्फ़ इस लिए ? ओंकारा ने आगे बढ़कर मालिनी के बाबा की ज़मीन के दस्तावेज़ मालिनी के हाथ में थमा दिए। इस पर मालिनी ने उसे आश्चर्य से देखा। उसने इस बात की कभी

उम्मीद नहीं की थी। उसने ओंकारा को ग़ौर से देखा और पूछा की यह सब क्यों कर रहा है। ओमकारा ने जवाब दिया: "तुम्हारी ख़ुशी के लिए।"मालिनी के मन में संतोष था कि उसे ज़मीन के काग़ज़ात मिल गए। उसने मन ही मन शिव जी को इसके लिए आभार व्यक्त किया, लेकिन कुछ नहीं कहा।

ओंकारा ने मालिनी को देखते हुए कहा — 'मुझे पता है, तुम मुझसे क्या कहना चाहती हो। मालिनी ने आश्चर्य से पूछा — 'क्या? ओंकारा ने उसकी ओर कदम बढ़ाते हुए कहा — 'वही, जो तुम कह नहीं पा रही हो। ओंकारा मालिनी के पास आ गया, उनके बीच अब केवल एक कदम की दूरी थी। उसने कहा — 'तुम्हारे लिए एक कविता लिखी है, सुनना चाहोगी? मालिनी ने 'हाँ' में सिर हिलाया।ओंकारा मालिनी की आँखों में देखते हुए मुस्कुराया और बोला — 'बहुत जल्दी मान गई तुम तो।मालिनी ने भाव सिकुड़ते हुए उसे देखा और कहा — 'ठीक है, मत सुनाओ... अब मुझे नहीं सुनना। मालिनी मुड़कर जाने लगी।

ओमकारा ने मालिनी का हाथ पकड़कर उसे रोक लिया। उसने मालिनी को अपनी तरफ़ खींचकर सामने खड़ा किया और कहा: "तुम सुनोगी।" मालिनी ने कहा: "नहीं, मुझे नहीं सुनना।" ओमकारा ने उसे थोड़ा गुस्से से कहा: "तुम्हें सुनना होगा, मैंने यह तुम्हारे लिए ही लिखा है, मालिनी।" मालिनी की खामोशी देखकर वह थोड़ा और पास आया। एक गहरी साँस लेकर उसकी आँखों में देखते हुए हल्की और गहरी आवाज़ में कहना शुरू किया।

आपकी नज़रें भी कमाल करती हैं

जिन बातों से होंठ को

इनकार है, ये उसी का

इज़हार करती हैं।''

मालिनी ने सख़्त आवाज़ में कहा — 'कहना क्या चाहते हो? ऐसा कुछ भी नहीं है। मुझे जाने दो।

ओंकारा ने मालिनी को रोकते हुए कहा — 'चाहे ज़िक्र न करो, पर दिल की हालत क्या है, हमें पता है। आपकी चाहत क्या है।

मालिनी ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया और वहाँ से चली गई। ओमकारा के लिए मालिनी का इस तरह से चले जाना कठिन था, लेकिन उसके चेहरे से यह साफ़ था कि वह सब समझ रही थी और दिल में असर हो रहा था। घर पहुँचकर मालिनी ने ओमकारा द्वारा दिए गए ज़मीन के काग़ज़ात अपने बाबा को सौंप दिए। मालिनी ने उन्हें बताया कि यह काग़ज़ात कैसे प्राप्त हुए। बाबा को बहुत ख़ुशी हुई कि उनकी ज़मीन अब वापस उनकी हो गई है। मालिनी ने ओमकारा की इस मदद के लिए मन ही मन उसका शुक्रिया अदा किया। घर पर उसने यह भी कहा कि वह ओमकारा को भोजन के लिए आमंत्रित करे ताकि वे उसका धन्यवाद कर सकें। मालिनी ने कहा: "अगर धन्यवाद करना ही है तो शिव जी का करो। मेरे शिव जी की कृपा से ही यह सब संभव हो पाया है।"

मालिनी की माँ ने उसे समझाने की कोशिश की: "जिसने हमारी मदद की है, उसका शुक्रिया अदा करना चाहिए।" लेकिन मालिनी ने साफ़ इनकार कर दिया और उनकी बात न मानते हुए उसने कहा -कोई महान कार्य नहीं किया, उस पाप का जो उसके पिता जी ने किया था। माता-पिता जानते थे कि मालिनी जैसी लड़की को समझाना नामुमकिन है। इसलिए उन्होंने उसकी बात मान ली।

मालिनी अध्ययन करने के लिए केंद्रीय पुस्तकालय गई और वहाँ व्यवसायिक विषयों का अध्ययन करने लगी। उसने कई सारी किताबें पढ़ीं और जानकारी एकत्र की। फिर उसने घर में ही परफ़्यूम बनाने के बारे में पढ़ा

और जाना कि पुराने समय में लोग पारंपरिक ढंग से परफ़्यूम बनाते थे। जानकारी एकत्र करने के बाद मालिनी ने सोचा कि वह घर पर ही परफ़्यूम बनाएगी (शुरुआत के लिए प्रयोग स्वरूप)। चूँकि मालिनी को कमल के पुष्प अधिक प्रिय थे, इसलिए उसने पारंपरिक विधि अपनाकर घर पर कमल का परफ़्यूम बनाया।

मालिनी ने जिन भी लोगों को उस नमूने का अनुभव कराया, सभी ने उसकी सुगंध का परीक्षण किया। उसने गुलाब, चमेली, नीलगंधा, मोगरा, जूही और केसर के पुष्पों से परफ़्यूम बनाया। लोगों को उसका उपयोग करना वास्तव में पसंद आया। हर कोई मालिनी द्वारा बनाए गए परफ़्यूम की खुशबू से मोहित हो गया। उस अद्भुत सुगंध से वातावरण महकने लगा। परीक्षण के बाद अब लोग मालिनी द्वारा बनाए गए परफ़्यूम को ख़रीदना चाहते थे। उसके परफ़्यूम में किसी भी प्रकार के कोई रश्नियक पदार्थों का मिश्रण नहीं था। यह पूरी तरह प्राकृतिक परफ़्यूम था और **शुद्धता** और दिव्यता से परिपूर्णता थी। मालिनी ने अपने परफ़्यूम ब्रांड का नाम **"सुरभि"** रखा। कमल की निर्मलता के कारण यह परफ़्यूम उन फूलों के समान शुद्ध था।

ओमकारा ने हर प्रतिक्रिया पर ध्यान दिया। मालिनी के कार्यों में दखल देने से उसने साफ़ मना कर दिया था, फिर भी ओमकारा ने अप्रत्यक्ष रूप से उसकी मदद की। ओंकारा ने बढ़-बढ़ कर सौंदर्य प्रसाधन वाले संगठनों को सुरभि के बारे में बताया और उसकी गुणवत्ता के बारे में प्रचार-प्रसार किया, जिससे उन् संगठनों ने मालिनी के **सुरभि** के साथ अपने उत्पादों को जोड़ा। मालिनी ने अपने ब्रांड **"सुरभि"** का अनावरण किया और उसके लिए एक टैगलाइन भी तैयार की।

- **"सुरभि — शुद्धता और दिव्यता ही है, हमारी पहचान।**

- **"सुरभि आपके जीवन में लाए एक अमोल सुगंध, क्योंकि हमारी खुशियों का कमल आपके स्वर्णिम मुस्कान से ही खिलता है।"**

इस टैगलाइन की वजह से लोगों को सुरभि और भी ज़्यादा पसंद आने लगी, क्योंकि यह टैगलाइन व्यक्तिगत, भावनात्मक तथा व्याख्यात्मक थी, जिसने लोगों के हृदय को छू लिया था। इसी कारण सुरभि अब और भी बड़े पैमाने पर बिकने लगी थी। हर जगह सिर्फ सुरभि की ही माँग थी। अब निश्चित ही है कि इतनी भारी मात्रा में लाभ होने से मालिनी के परिवार की आर्थिक स्थिति पहले से बहुत ज़्यादा अच्छी हो चुकी थी और मालिनी इन सबका श्रेय शिव जी को ही मानती थी।

सुबह के ठीक चार बजे थे। मालिनी अपने कमरे में सो रही थी। मालिनी सुबह के चार बजे उठी, लेकिन चैन की नींद नहीं उसका चेहरा पसीने से तर-बतर था, साँसें तेज़ चल रही थीं और आँखें बंद थीं, परंतु मालिनी के अवचेतन मन में कुछ चल रहा था, उसे कुछ अजीब से दृश्य दिखाई दे रहे थे। एक विशालकाय ब्रह्मराक्षस मंदिर के पीछे के हिस्से से निकलकर आता है और मालिनी को मंदिर के पास पा कर उसकी तरफ़ बढ़ता है, जब मंदिर के पास खड़ी मालिनी की नज़र उस पर पड़ती है, उसके हाथों से पूजा की थाली छूट कर नीचे गिर जाती है और मालिनी ने भ्रमराक्षस की आँखों में देखा। उसकी आँखें लाल थीं। जैसे-जैसे वह राक्षस मालिनी की तरफ़ बढ़ रहा था, मालिनी का दिल उतनी ही तेजी से धड़क रहा था। वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे। उसका दिमाग सुन्न पड़ गया था। मालिनी की पलकें जम-सी गई थीं। वह एकटक उस भ्रमराक्षस को देखे जा रही थी। वह वहाँ से भाग जाना चाहती थी, मगर उसके पैर जैसे ज़मीन पर जड़ गए थे। भ्रमराक्षस मालिनी के बहुत करीब आ गया था। उसने मालिनी की ओर हाथ बढ़ाया। अचानक मालिनी को एहसास हुआ कि उसका हाथ पकड़कर किसी ने उसे

अपनी ओर खींच लिया और राक्षस से दूर कर दिया। मालिनी ने उसकी ओर देखा। वह मालिनी का हाथ पकड़कर मुड़कर भागने लगा। मालिनी उसका चेहरा नहीं देख पाई। मालिनी ने पीछे मुड़कर देखा—वह भ्रमराक्षस उनके पीछे आ रहा था और वो अज्ञात व्यक्ति मालिनी को लेकर और तेज़ी से भागने लगा। सामने एक छोटा-सा तालाब था। उस पर बहुत सारे बड़े-बड़े घास उगे हुए थे। वे घास इतने ऊँचे थे कि उनकी वजह से तालाब के दूसरी ओर देख पाना लगभग असंभव था, क्योंकि वे घास तालाब के बीचोबीच एक दीवार की तरह खड़े थे। तालाब का पानी भी ज़्यादा गहरा नहीं लग रहा था। उस लड़के ने उसे आगे बढ़ने के लिए कहा। मालिनी उसकी बात मानकर आगे बढ़ी। उसने घास को हल्का-सा हटाकर उस पर झाँककर देखा। उस पार देखते ही मालिनी की आँखों में तिलमिलाहट हुई। अत्यधिक तेज़ रोशनी के सामने मालिनी की आँखें चौंधिया गईं। उसने डर अपने कदम पीछे कर लिए और मुड़कर उस व्यक्ति की तरफ देखा, जिसने उसे ब्रह्मराक्षस से बचाया जहाँ वह लड़का खड़ा था, वहाँ अंधेरा होने के कारण मालिनी उसका चेहरा नहीं देख पा रही थी। घास को फिर से हटाकर मालिनी ने उससे अपने साथ आने के लिए कहा।

घास के हटने की वजह से दूसरी ओर से फिर से प्रकाश आया और सीधे उस लड़के के चेहरे पर पड़ते ही मालिनी उसे हैरानी से देखती रही। वह लड़का ओंकार ही था। देखते ही देखते उसका चेहरा प्रकाशमय हो गया और ओंकार उस तेजस्वी प्रकाश में कहीं विलीन हो गया। मालिनी ने उसे रोकना चाहा, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। ओंकार मानो उसी प्रकाश में समा गया था। अब मालिनी घास के दूसरी ओर थी। वह घास अब बंद हो चुकी थी और उस तरफ कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। जहाँ पहले ओंकार खड़ा हुआ था, वहाँ मालिनी ने आगे बढ़ने का फ़ैसला किया।

उस तेजस्वी प्रकाश से होकर गुज़रते हुए जब मालिनी उस पार पहुँची, उसने देखा कि वहाँ एक मंदिर था। यह एक देवी का मंदिर था, जो स्वर्ण का बना हुआ था और फूलों से सजा हुआ था। मालिनी पास जाकर देखती है कि उस मंदिर में माँ दुर्गा स्वयं सिंह पर सवार विराजमान थीं। यह किसी मंदिर की मूर्ति नहीं थी, बल्कि माता रानी स्वयं साक्षात वहाँ उपस्थित थीं। मालिनी ने हाथ जोड़कर और सिर झुकाकर नमन किया। माता रानी ने मुस्कुराकर मालिनी को आशीर्वाद दिया। जब मालिनी ने आगे की ओर देखा, तो सामने महादेव थे। वे भी उसी प्रकार के स्वर्ण मंदिर में विराजमान थे, जो विभिन्न मनोहर पुष्पों से सुसज्जित था। शिवजी को देखकर मालिनी की आँखों से प्रसन्नता और रूपी अश्रु बहने लगे। वह शिवजी के सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो गई। शिवजी का आशीर्वाद तथा आश्वासन पाकर मालिनी आगे बढ़ी। तब उसने पाया कि ऐसे स्वर्ण मंदिर केवल एक या दो नहीं, बल्कि सात थे। उनमें अलग-अलग देवी-देवताओं के मंदिर थे—श्रीकृष्ण, माता लक्ष्मी, सरस्वती मैयाँ, श्री हरि कृष्ण और माँ काली का भी मंदिर। मालिनी ने सभी देवी-देवताओं को प्रणाम किया। अंत में जब उसने माँ काली के समक्ष हाथ जोड़कर अपनी आँखें बंद कीं, तो मालिनी की आँखें अब सपने से जाग चुकी थीं।

अपने बिस्तर पर बैठी मालिनी सोच रही थी—यह कैसा सपना था! शिवजी का मेरे सपने में आना तो ठीक है, वे तो हमेशा मेरे सपनों में आते हैं। लेकिन माता रानी और श्रीकृष्ण ?

पर वह इन सब में खुश भी थी कि उसने इतना अच्छा सपना देखा। मालिनी ने खिड़की से बाहर देखा, सूर्योदय अभी भी नहीं हुआ था, परन्तु चिड़ियों की चहचहाहट साफ़ बया कर रही थी कि सूर्य उदित होने में अब अधिक देर नहीं है। लेकिन बिस्तर से उठने के बजाय मालिनी कंबल ओढ़कर फिर से सो गई। दोबारा सोने के बाद जब मालिनी गहरी नींद में चली गई, उसे एक और

सपना आया। मालिनी को अंधेरे में एक साया दिखाई दिया, जो मंदिर के पीछे स्थित तालाब की ओर जा रहा था। मालिनी ने उसका पीछा किया। चारों तरफ धुंध के कारण कुछ भी ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था। मालिनी उसके पास पहुँची। वह एक छोटा लड़का था, लगभग 10–11 साल का। मालिनी ने उससे पूछा कि वह कौन है और यहाँ क्या कर रहा है। जवाब में उस छोटे लड़के ने तालाब से एक कमल का फूल तोड़ लिया। उसने वह फूल मालिनी के हाथ में दिया। मालिनी कुछ कह पाती, इससे पहले ही उसकी माँ ने उसे जगा दिया।

मालिनी उठकर सोचने लगी—यह लड़का कौन था और मेरे सपने में क्यों आया? क्या मैं इसे जानती हूँ? तभी कमरे की खिड़की से होकर एक तितली मालिनी के कमरे में प्रविष्ट हुई और उड़ते हुए उसके कंधे पर आकर बैठ गई।

मालिनी ने उस तितली को पहचान लिया। वह तितली हमेशा उसे दिखाई देती थी। मालिनी ने उस तितली को अपने कंधे से उठाकर प्यार से अपनी हथेली में लिया। उसे देखते हुए मालिनी के मन में विचार आया कि उस लड़के के बारे में जानने के लिए वहाँ जाना चाहिए, जहाँ उसने उसे सपने में देखा था। मालिनी ने तितली को आज़ाद किया और तुरंत बिस्तर से उठकर सीधे मंदिर की ओर चल पड़ी। बाहर सूर्योदय हो चुका था, लेकिन फिर भी धुंध छाई हुई थी। इस कारण दूर का नज़ारा साफ़ नहीं दिख पा रहा था।

जब मालिनी मंदिर के पीछे तालाब के पास पहुँची, उसे कोहरे आड़ में किसी लड़के को देखा जो तालाब के किनारे बैठा था और तालाब में खिले कमल को निहारते हुए मालिनी ने मन में कहा—यह तो बिल्कुल उस सपने जैसा है। लेकिन वह लड़का दस साल का नहीं था। जब मालिनी उसके पास जाकर देखी, तो वह ओंकार था। ओमकारा ने मालिनी को अपने पास महसूस किया

और जैसे ही उसने मुड़कर मालिनी को देखा, उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। मालिनी ने उसे पूछा — "आप यहाँ क्यों हैं?"

ओमकारा ने कहा — "तुम्हें पता है, मैं यहाँ क्यों हूँ?"

मालिनी: ". नहीं, मुझे नहीं पता, बताओ मुझे..।"

ओमकारा: "क्योंकि तुम यहाँ हो।"

मालिनी ने उसे अजीब-सा देखा और कहा: "और मैं यहाँ क्यों हूँ?"

ओमकारा ने मुस्कुराकर कहा: "क्योंकि मैं यहाँ हूँ।"

मालिनी ने उसे गौर से देखा और कहा: "आपको लगता है, मैं यहाँ आपके लिए आई हूँ?"

मुस्कुराकर ओमकारा ने कहा: "लगता नहीं... ऐसा है।"

मालिनी: "नहीं... मैं तो..." (ओमकारा ने मालिनी की बात बीच में ही काट दी और कहा):

"फिर से कोई सपना देखा क्या?"

मालिनी: "हाँ, लेकिन आपको कैसे पता?"

ओमकारा: "मालिनी, मुझे सब याद है... शायद तुम भूल गई हो।"

मालिनी: मुझे याद है, "आप ज़मींदार हैं?"

ओमकारा: "बस? और कुछ नहीं?"

मालिनी: "और क्या?" (मालिनी की बात सुनकर ओंकारा ने तालाब से एक कमल का फूल तोड़कर उसे लाकर मालिनी के हाथ में दिया।)

मालिनी ने फूल अपने हाथ में लिया और उसे कुछ याद आया। उस सपने के अलावा भी कुछ था, जो उसे स्मरण हो रहा था।

ओमकारा: "कुछ याद आया?"

मालिनी: "हाँ।"

ओमकारा: "क्या?"

मालिनी: बचपन में एक बार जब हम स्कूल में थे, आपने मेरे हाथ से वह कमल का फूल छीनकर उसे कुचल दिया था।

ओमकारा: तुम्हें पता है न मैंने? ऐसा क्यों किया था।

मालिनी: "हाँ, मुझे परेशान करने के लिए।

ओमकारा: "नहीं मालिनी... तुम्हें याद है, कक्षा में उस दिन किसी ने तुम्हें फूल दिया था?"

मालिनी: "हाँ, तो?"

ओमकारा: "उसने तुम्हें फूल दिया था, यह बात मुझे पसंद नहीं थी।

मालिनी ने ओमकारा को याद दिलाया कि किस तरह वह स्कूल में उसे हर रोज़ परेशान करता था। कभी उसे दूर कर देता, कभी चिढ़ाता, तो कभी उसका सामान खराब कर देता। कभी बोर्ड पर लिखी बातें मिटा देता, कभी उससे लड़ता। और तो और, उसका टिफ़िन भी छीन लेता और खा जाता था। हद तो तब होती थी जब वह मालिनी को उसके दोस्तों से अलग कर देता था हमेशा सीनियरिटी दिखाता था, जिससे मालिनी को हमेशा डिटेंशन मिलती थी।

किन्तु ओमकारा ने उसे बताया कि यह सब केवल एक बहाना था। लड़ने-झगड़ने, होमवर्क खराब करने और जब शिक्षक उसे डिटेंशन कक्ष में डालते

थे — तो मालिनी के साथ समय बिताना उसे अच्छा लगता था, फिर चाहे वह किसी भी कारण से क्यों न हो।ओमकारा ने मालिनी को बताया कि उसे परेशान करने पर मालिनी का गुस्सा आना उसे बहुत पसंद आता था। ओमकारा ने मालिनी से कहा की मालिनी उसे अच्छी लगती है, लेकिन और भी अच्छी लगती है जब वह गुस्से में होती है। उसकी 'आँखें' और भी ज्यादा खूबसूरत लगती हैं जब उनमें गुस्से की चिंगारी होती है।

ओमकारा ने मालिनी से कहा – तुम्हारी आँखों के लिए कुछ लिखा है सुनोगी ?"

मालिनी ने सुनने से मना कर दिया। ओमकारा ने कहा – "मैं फिर कहूँगा।"

मालिनी ने उसे गुस्से भरी नज़रों से देखा और ओमकारा ने मालिनी की आँखों में देखते हुए कहना शुरू किया।

"तुम्हारी आँखे "

कुछ तो है तुम्हारे दिल में,

जो तुम छुपा रही हो मगर

तुम्हारे दिल का हाल बता रही

हैं ये तुम्हारी आँखें।

अपने हृदय में ग़म का

पहाड़ लिए घूमती हो,

फिर भी चेहरे पर एक हल्की

सी मुस्कान बेवजह लिए फिरती हो।

बेवजह ही तुम जो

इतना मुस्कुराती हो

जो दुःख तुम अपने सीने में

छुपाकर भरती हो यूँ ठंडी आहें,

उन्हीं को बयाँ करती हैं

तुम्हारी आँखें।

माना कि सारी दुनिया बेगानी है,

पर तुम तो हमें अपना भी नहीं समझती।

अपने दिल का हाल बताने से हो डरते।

होंठों से तो तुम कुछ नहीं कहती,

मगर हर वो बातें, जो तुम छुपाना

चाहती हो मुझसे उन्हें कह

जाती हैं तुम्हारी आँखें।

तुम मानो या न मानो,

पर हम तुम्हारे लिए ग़ैर नहीं

ये जानती है

तुम्हारी आँखें।।

मालिनी ने ओमकारा से पूछा – इन सब का क्या मतलब है ?

ओमकारा ने जवाब दिया – "मैं जानता हूँ, तुम्हारे दिल में कुछ है।"

मालिनी: "क्या मतलब?"

ओमकारा ने मुस्कुराकर कहा – "मतलब ये कि मैं तुमसे दोस्ती करना चाहता हूँ।"

मालिनी: "पर मैं आपको अपना दोस्त क्यों मानूँ?"

ओमकारा: "क्यूँकि मैं तुम्हें अपना दोस्त मानता हूँ।

मालिनी: “तो क्या मैं सिर्फ़ इसलिए आपसे दोस्ती करूँ, क्योंकि आप ऐसा चाहते हैं?

ओमकारा: "हाँ, बिल्कुल।"

ओमकारा: "क्यूँकि मैं तुम्हें अपना दोस्त मानता हूँ।"

मालिनी: "तो क्यूँकि आप सिर्फ इस लिए दोस्ती करना चाहते हैं?"

ओमकारा: "हाँ, बिल्कुल।"

मालिनी ने ओमकारा का प्रस्ताव ठुकरा दिया। ओमकारा ने उसे मनाने की कोशिश की, मगर फिर भी मालिनी वहाँ से चली गई। उसने एक बार भी ओंकारा की तरफ मुड़कर नहीं देखा। ओंकारा वहीं जमे रहे, वह मूर्तिवत खड़ा रहा और मालिनी को तब तक देखता रहा जब तक वह उसकी नज़रों से ओझल न हो गई।

उस रात मालिनी को एक सपना आया। रात में सपने में मालिनी ने देखा कि ओमकारा उसके घर के गेट के सामने खड़ा है। वह मालिनी से कुछ कहने की कोशिश कर रहा था। उसके हाथों में एक सुंदर कमल का गुलदस्ता था। गुलदस्ता ओमकारा ने स्वयं मालिनी के लिए बनाया था, जो वाकई उसकी मुस्कान की तरह ही बहुत खूबसूरत था। सपने में मालिनी ने देखा कि ओमकारा अपने कदम आगे बढ़ाता है, लेकिन फिर अचानक उन्हें पीछे

खींच लेता है। वह काफी देर तक वहीं खड़ा रहा, फिर पता नहीं क्या सोचते हुए, ऐसा लगा कि वह मुड़कर जाने लगा।

मालिनी ने उसे जाते हुए सपने में देखा, और तभी मालिनी को लगा कि वह सच में जा रहा है। तभी उसकी आँख सपने से खुल गई। मालिनी ने बाहर आकर सोचा – "क्या वह सच में जा रहा है?" अपने बालकनी से झाँककर नीचे देखा, तो पाया कि ओमकारा सच में वहाँ था। अब वह जा रहा था। मालिनी ने सोचा कि उसे रोकने के लिए आवाज़ , लेकिन तब तक ओमकारा बहुत दूर निकल चुका था। शायद मालिनी की आवाज़ उस तक पहुँच भी न पाती। मालिनी उसे जाते हुए तब तक देखती रही, जब तक वह रात के अंधेरे में गुम न हो गया। मालिनी ने रात भर सोचा – वह क्यों आया था, और अगर आया था तो उसने कुछ कहा क्यों नहीं।

अगर वह मुझसे मिलने आया था, तो मुझसे बात क्यों नहीं की? बात किए बिना ही चला गया। किसी लड़के का किसी लड़की के घर के बाहर इस तरह आना साधारण बात हो सकती है, किन्तु मालिनी के लिए यह अलग था, क्योंकि उसके लिए यह सब कुछ नया था। लेकिन मालिनी के लिए यह सब कुछ नया था। सुबह मालिनी ने ओमकारा को मंदिर के बारे में देखा, लेकिन उससे बात करना समझ नहीं पा रही थी कि कहे क्या। ओमकारा अभी भी मंदिर में था। मालिनी उसकी पूजा खत्म होने का इंतज़ार कर रही थी, अभी भी सोच रही थी कि उससे क्या बात किस तरह से शुरू करे, जैसे ओमकारा ने शिव जी की पूजा करने के बाद मुड़कर मालिनी को देखा और कहा – "कल रात मैंने सपने में आपको देखा था। आप कुछ कहना चाहते थे, है न?"

ओमकारा ने कहा: एक बार सपना देखना, तब समझ आ जाएगा।

मालिनी को ओमकारा की बातों का मतलब समझ नहीं आया। वह उसे प्रश्न भरी नज़रों से देखती रही। ओमकारा ने उसे हल्की लेकिन प्यारी मुस्कान दी

और फिर वहाँ से चला गया। मालिनी सोचती रही कि उसकी बातों का मतलब क्या था।

मालिनी को अक्सर ही ओमकारा से जुड़े हुए सपने आते थे। कभी वह उसे मंदिर में देखती । एक बार मालिनी अपने भाई सौरभ के स्कूल में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में गई हुई थी और मुख्य अतिथि के रूप में ज़मींदार और उसका परिवार उपस्थित था। मालिनी की नज़र उस ज़मींदार के भाई के बेटे महेंद्र पर पड़ी, जो पहले से ही मालिनी को देखे जा रहा था।

वह लड़का जिसकी वजह से मालिनी के परिवार को इतनी परेशानी झेलनी पड़ी थी, भले ही अब हालात सुधर गए थे, लेकिन अभी भी मालिनी ने उसे माफ़ नहीं किया था। और वह उसे माफ़ करती भी कैसे, उसके बाबा’’मरते-मरते बचे थे उस महेंद्र की वजह से।

महेंद्र को देखते ही मालिनी के दिमाग में सारी पुरानी बातें चलने लगीं। मालिनी को बहुत गुस्सा आ रहा था, उसे लग रहा था कि वह उसका साध फोड़ दे।आख़िरकार कार्यक्रम ख़त्म हुआ और मुख्य अतिथि के जाने से पहले ही मालिनी उठकर चली गई। सभागार से निकलकर जब मालिनी स्कूल के कॉरिडोर में पहुँची, उसे आभास हुआ कि कोई उसके पीछे चल रहा है। मालिनी अचानक रुक गई। वह अंदर से डर गई। उसे लगा कि महेंद्र उसके पीछे है। लेकिन जब उसने पीछे पलटकर देखा, तो थोड़ी हैरान और खुश हुई, क्योंकि वह ओमकारा था जो मालिनी के पीछे था। उसे देखते ही मालिनी के चेहरे पर राहत आई। उसे देखकर जो खुशी उसके हृदय में आई, वह उसने चेहरे पर ज़ाहिर नहीं होने दी।मालिनी ने ओमकारा से पूछा – "आप मेरा पीछा क्यों कर रहे हैं?"

ओमकारा ने मालिनी के प्रश्नों का जवाब दिया – "मैं तुम्हारा पीछा नहीं कर रहा, मैंने तुम्हें बाहर आते देखा, तो बस आया।"

मालिनी: "आप वहाँ कार्यक्रम में उपस्थित थे? लेकिन मैंने तो आपको नहीं देखा।"

ओमकारा: "तुम मुझे तब देखती न, जब तुम्हारी नज़रें मेरे भाई से हटतीं।"

मालिनी: "क्या बात करना है आपको?"

ओमकारा ने मालिनी से कहा कि वह फिर से दोस्ती करना चाहता है। मालिनी ने पहले तो ओमकारा का प्रस्ताव मना कर दिया, लेकिन उसके मनाने पर अंत में उसने कह ही दिया अब इतना तो ठीक है, हम दोस्त हैं सिर्फ दोस्त। ओमकारा ने मुस्कुराकर अपना हाथ आगे बढ़ाया और कहा – "दोस्ती के लिए तो हाथ मिलाना ही चाहिए। सकती हो न, मेरा हाथ पकड़ो। मालिनी ने भी आगे बढ़कर अपना हाथ बढ़ाया। ओमकारा ने उसका हाथ दबाया और एक दोस्त की तरह हाथ मिलाया। कुछ देर बाद उसने मालिनी का हाथ छोड़ दिया। अब मालिनी और ओमकारा के बीच दोस्ती हो चुकी थी। मालिनी अब ओमकारा को देखकर गुस्सा नहीं करती थी, बल्कि अब वह उससे प्यार से मिलती थी।

अब मालिनी को ओमकारा का उसके लिए मंदिर में होना अच्छा लगने लगा। वे दोनों साथ मिलकर शिवजी की पूजा करते और मंदिर के पीछे वाले तालाब के किनारे बैठकर कमल के फूलों को निहारते हुए बातें करते। उनकी बातचीत अधिकतर गंभीर विषयों पर होती थी—जैसे मालिनी के वासाय के बारे में, उसके भाई की पढ़ाई के बारे में और ओंकारा के विषम परिवार के बारे में। एक दिन ओंकारा ने मालिनी से पूछा कि उसके बचपन के सपनों का क्या हुआ। मालिनी बचपन में डॉक्टर बनना चाहती थी।”

मालिनी ने ओमकारा को बताया कि उसके परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, इतनी अच्छी नहीं थी। मालिनी के माता-पिता चाहते थे कि वह उच्च शिक्षा प्राप्त कर मालिनी मनोचिकित्सक बनना चाहती थी। ओमकारा

ने मालिनी को समझाया उसके सपने को समझाया कि पुरानी बातों को याद करके दुःखी होना अब ज़रूरी नहीं है। उसकी ज़िंदगी पहले से भी बेहतर है। वह एक अच्छी पेंटर है, और मालिनी की कविताएँ भी अच्छी लिखती हैं। ओमकारा ने मुस्कुराते हुए कहा – "तुम्हारा व्यक्तित्व बहुत अच्छा है। तुम तो बहुत प्रतिभाशाली और बेहद मज़बूत हो, मालिनी।"

तुम्हें बिल्कुल भी उदास होने की आवश्यकता नहीं है। तुम तो एक अनोखी लड़की हो। मालिनी ने यह सुनकर बहुत कुछ सोचा, फिर उसने ओमकारा से पूछा – "आपसे एक सवाल पूछूँ?"

ओमकारा: "हाँ, पूछो।"

मालिनी: "आप तो पहले मतलब बचपन में भगवान को मानते थे न? फिर अब क्यों ? ओमकारा मालिनी की बात सुनकर कुछ देर चुप रहा, फिर उसने कहा – "हाँ, रही होगी कोई वजह। लेकिन तुम्हें देखकर मुझे शिव भक्ति पर फिर से विश्वास हो गया है। मालिनी को यह सुनकर बहुत अच्छा लगा।

कुछ ही दिनों में मालिनी को ओमकारा से मिलने और उससे बात करने की आदत गई हो। मालिनी रोज़ मिलती और हर राज़ ओमकारा से साझा करती थी। ओमकारा से बात करके मालिनी को अच्छा लगता था। कुछ चलता रहा, फिर से मिलने मंदिर आती थी। हर समय बात करने की इच्छा रहती थी क्योंकि मालिनी को उससे बहुत मतलब था। उसे समय निकालकर देखना अच्छा लगता था। ओमकारा से मालिनी रोज़ शिव की बातें करता था। यह सब समझने में मालिनी को आनंद आता था। उससे बातें करना अच्छा लगता था। ओमकारा से प्यार करने में मालिनी को काफ़ी समय लग गया।

लगभग एक वर्ष गुजर चुके थे, उसे ओमकारा से लगाव क्यों है, यह सवाल उसके मन में उठता था। किसी भी काम में उसका मन नहीं लगता था, बस हर समय ओमकारा के विषय में ही सोचना। मालिनी ने बिना सोचे कुछ कह

दिया। बाद में एक दिन बीच में ओमकारा और मालिनी के बीच छोटी-सी बात पर बहस हो गई। उस बहस में ओमकारा ने गुस्से से चिल्लाया। इस बात पर मालिनी अकेले में बहुत सोच रही थी। उसके गुस्सा करने पर मालिनी रो रही थी और सोच रही थी कि थोड़ा-सा फर्क क्यों पड़ रहा है। उसे यह भी ख्याल आया कि ओमकार की हिम्मत कैसे हुई मालिनी पर चिल्लाने की। मालिनी को गुस्से से ज़्यादा रोने आ रहा था।

मालिनी को आभास हुआ कि उसे शायद ओमकार से प्रेम हो गया है। उसने अपनी डायरी उठाई और हमेशा की तरह बालकनी में बैठ गई लिखने। मालिनी ने अपने मन के कुछ सवाल अपनी डायरी में लिखना शुरू किया।

किसी से इंतज़ार,

किसी से अपने प्यार का

इज़हार,

ये दिल किसी के लिए बेकरार।

देखकर उसे धड़कनों का बढ़ जाना,

उसकी ख़ैरियत जानना, साँसों में साँस

आना।

प्रेम में उसके बाकी सब भूल जाना,

लेकिन एक पल के लिए भी उसे न भूल पाना।

उसकी एक झलक पाने को इन नज़रों का तरसना,

उसकी आवाज़ सुनने को इस दिल का तड़पना।

उसकी याद आते ही

हल्की-सी मुस्कान होठों पर आ जाती थी।

उसके बिना मैं कुछ नहीं जैसे वो हो मेरी जान,

जिसके सामने आते ही साँसें थम-सी जाएँ,

इस दिल को किसी के बेवजह इतना चाहना

शायद —यही तो प्रेम है न?

मालिनी रात भर इसी विषय में सोचती रही। उसने निश्चय किया कि सुबह होते ही वह ओंकारा से बात करेगी और अपने दिल की बात कहेगी—यह बताएगी कि वह उसके लिए क्या सोचती है। सुबह जब मालिनी की आँखें खुलीं तो उसने अपने आप को एक अजनबी जगह पर पाया। बिस्तर से उठकर जब उसने आईने में देखा तो वह चौंक गई। उसने नीले रंग की सिल्क की साड़ी पहन रखी थी। उसकी आँखें और भी फैल गईं जब उसने अपने माथे पर सिंदूर देखा।चारों ओर नज़र दौड़ाते ही मालिनी को एहसास हुआ कि वह किसी ज़मींदार की हवेली में थी।

अगले ही पल मालिनी ने अपने आप को एक ऐसे कमरे में पाया जो पूरी तरह लकड़ी से बना हुआ था। हर सामान लकड़ी का ही था—टेबल, कुर्सी, अलमारी, यहाँ तक कि फर्श, कमरे की दीवारें और खिड़कियाँ तक। सबसे बढ़कर, वह मानो जैसे लकड़ी का कमरा किसी हुनर से गढ़ा गया हो। बात यह थी कि कमरा बहुत ही गंदा था। जैसे बरसों से किसी ने उसे साफ नहीं किया था। वहाँ पाँव रखते ही दीवारों और छत पर जाले लटकते दिखाई देते थे। कमरे में रखे ज़्यादातर सामान पर मोटी धूल जमी हुई थी। टेबल और कुर्सी पर तो धूल की हज़ारों परतें थीं। फिर वहाँ पर कहीं से दो महिलाएँ आईं। उन्होंने मालिनी से बात की और उसके हाथ में झाड़ू तथा सफाई का कपड़ा थमा कर चली गईं। उस कमरे में मालिनी अकेली थी।

उसके हाथ में झाड़ू था और उसके सामने वह गंदा कमरा, जिसे मालिनी को अकेले साफ़ करना था। मालिनी सफाई में लग गई। कमरा इतना गंदा था कि साफ करते-करते सुबह से शाम हो गई। कमरे की सफाई के बाद वह रसोई में गई और उसने खीर बनाई। फिर मालिनी ने खाना बनाना शुरू किया। बहुत ही कम समय में उसने गाजर की सब्ज़ी, पनीर और कई अन्य व्यंजन तैयार कर लिए। मालिनी ने हलवा और राजमा-चावल भी बनाए। सब कुछ करते हुए उसे बहुत खुशी हो रही थी। खाना बनाने के बाद मालिनी बाहर आकर देखने लगी। इतनी बड़ी हवेली में उसे कोई दिखाई नहीं दिया। पूरी हवेली घूमने के बाद भी मालिनी को कोई नहीं मिला। उस सुनसान निर्जन हवेली में अगर उसे कोई दिखाई दिया तो संगमरमर की दीवारों पर उसका खुद का प्रतिबिंब और सुनाई दे रही थी उसकी साँसें।

यह सब मालिनी को बहुत अजीब लगा। उसने अपने द्वारा बनाए गए भोजन को डाइनिंग टेबल पर सजाया और बैठ गई। मालिनी शायद सोच रही थी कि कोई आएगा कुर्सी पर बैठे-बैठे उसकी आँखें लगने ही वाली थीं और उसकी पलकें भारी हो रही थीं। वह राह देखते-देखते थक चुकी थी। फिर भी वह जागकर इंतज़ार कर रही थी क्योंकि वह जानना चाहती थी कि वह यह सब किसके लिए कर रही थी।

एक लंबे इंतज़ार के बाद मालिनी ने अपनी आँखें बंद कीं, उसे किसी के कदमों की आहट सुनाई दी। मालिनी ने तुरंत अपनी आँखें खोलीं। उसे किसी की मौजूदगी का एहसास हुआ। मालिनी ने आसपास देखा और उसकी नज़रें दीवार पर टंगी पेंडुलम घड़ी पर पड़ी, जिसमें रात के दस बजने में केवल कुछ ही मिनट बाकी थे। कदमों की आहट सुनकर उसने मुड़कर देखा—कोई उसके सामने खड़ा था। मालिनी ने पहले उसके चेहरे पर नज़र डाली और तुरंत पहचान लिया। वह ओंकार था। ओंकार को देखते ही मालिनी को राहत

मिली। वह दौड़कर उसके पास गई और उसे गले लगा लिया। मालिनी ने सांतवना और चैन की साँस ली। ओंकार ने भी उसे प्यार से गले लगाया।

मालिनी ने स्वयं ओंकार को भोजन परोसा और खिलाया, जो उसने अभी-अभी कुछ देर पहले बनाया था। ओंकार ने तारीफ़ करते हुए खाना खाया। यह जमींदारों की हवेली थी, जहाँ जमींदार और उसका परिवार भी खाने के लिए आया। मालिनी ने सबको भोजन परोसा, लेकिन जमींदार को देखकर उसे बहुत गुस्सा आया। मालिनी वहाँ खड़ी-खड़ी उसे घूरती रही। तभी दीवार पर टंगी पेंडुलम घड़ी बज उठी। मालिनी की आँखें खुलीं और उसने अपने आप को अपने कमरे में पाया। उसने घड़ी की ओर देखा, जिसमें सुबह के दस बज चुके थे। वह बिस्तर पर उठकर बैठ गई। तभी उसे सब याद आया और उसने अपने आप से कहा— 'उसकी सभी अच्छी बातें ओंकारा के साथ सिर्फ सपनों में ही क्यों होती हैं?

फिर मालिनी के चेहरे पर मुस्कान आई। सपने में उसे हल्की-सी याद आई कि उसकी और ओंकारा की शादी हो चुकी थी। मालिनी ने ओंकारा को बताया कि हर सपना सपने जैसा ही होता है और हकीकत अलग होती है। मालिनी की बात सुनकर ओंकारा के चेहरे पर उदासी और चिंता की लकीरें दिखाई दीं। मालिनी ने अपनी चिंता मन ही मन शिव जी से साझा की। उसके अंतरतम से आवाज आई— "जो तुम्हारे लिए सही होगा, वह तुम्हें ज़रूर मिलेगा। मालिनी ने इस पर गहराई से विचार किया। उसने गौर किया कि ओंकारा में कोई बुराई नहीं है, वह एक बहुत अच्छा लड़का है। लेकिन उसके मन में सवाल उठा— "वह अच्छा है, पर क्या वह मेरे लिए अच्छा है?" इस सवाल का जवाब उसने छोड़ दिया। मालिनी ने शिव जी को याद करते हुए तय किया कि ओंकारा सही है, इसमें कोई शक नहीं। अगर वह उसके लिए बना है, तो उसे पाने के लिए उसे कुछ करने की आवश्यकता नहीं होगी कि मेरे लिए सही है या नहीं—इसका फैसला मालिनी ने शिव जी पर छोड़ दिया।

उसने हाथ जोड़कर कहा, "शिव जी, मुझे नहीं पता कि मेरे लिए क्या उचित है और क्या अनुचित। यह फैसला आप ही करें। लेकिन इतना ज़रूर है कि ओंकारा मेरे जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण है और मेरी सच्ची खुशी सिर्फ उसी में है। अब यह आप पर है कि आप मुझे खुश देखना चाहते हैं या नहीं।" अपना भविष्य शिव जी के हाथों में सौंपकर मालिनी ने तय किया कि वह ओंकारा से ज़्यादा मिलेगी नहीं । उसे लगता था कि अगर ओंकारा उसे नहीं मिला तो उसे बहुत दुख और पीड़ा होगी उसके बिना रहने में। इसीलिए उसने ओंकारा से मिलने और बात करने की आदत धीरे-धीरे बंद कर दी।

कई महीने बीत गए और मालिनी ने ओंकारा से बात करना बंद कर दिया था। फिर भी उसके मन में कहीं न कहीं यह बात बनी रही कि ओंकारा अब उसके जीवन में नहीं है। मालिनी बिल्कुल ही उसे भूल नहीं पाई थी। कभी-कभी यह सोचकर मालिनी उदास हो जाती थी कि उसकी किस्मत में ओंकारा नहीं है। वह अपने और ओंकारा के बारे में नहीं, बल्कि ओंकारा की होने वाली पत्नी के बारे में सोचती थी। मालिनी कल्पना करती थी कि शादी के बाद ओंकारा की पत्नी किस तरह उसका ख्याल रखेगी, उसके लिए स्वादिष्ट खाना बनाएगी और उसकी सेवा करेगी। मालिनी इस बारे में इतना अधिक सोचने लगी कि उसे ओंकारा के किसी और के साथ होने की कल्पना से ही पीड़ा होती थी। इसी कारण उसकी तबीयत भी खराब रहने लगी।

एक बार मालिनी को सपना आया कि ओंकारा सपने में दूल्हा बना शादी कर रहा है। सपने में एक लड़की थी जिसके साथ वह अग्नि के फेरे ले रहा था। उस लड़की ने घूंघट ओढ़ रखा था। जब ओंकारा ने उसकी मांग भरने के लिए घूंघट उठाया तो उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था। मंडप में मालिनी दूर खड़ी होकर सब देख रही थी। वह उस लड़की का चेहरा नहीं देख पा रही थी क्योंकि सपने में उसका चेहरा धुंधला दिखाई दे रहा था। जब मालिनी का यह सपना टूटा, उसकी आँखें खुलीं। उसने तय किया कि वह ओंकारा से

मिलेगी। उसकी आँखों में आँसू थे। अब उसके लिए ओंकारा से बात करना बहुत ज़रूरी हो चुका था। कुछ समय बाद, जब मालिनी शिव मंदिर में इंतज़ार कर रही थी, तब ओंकारा वहाँ आया। मालिनी ने उसे बताया कि उसने सपना देखा है जिसमें वह शादी कर रहा था।

मालिनी ने उसे पूछा — "क्यों?"

ओंकारा ने जवाब दिया — घर वालों ने कहाँ। उन्होंने ही लड़की पसंद की है, और वह बहुत अच्छी है।

मालिनी कुछ भी नहीं कह पाई। उसकी तो जैसे हलक में जान अटक गई थी। कुछ दिनों बाद ओंकारा ने मालिनी को बताया कि कुछ दिनों में उसकी सगाई है। मालिनी को देखते हुए उसने कहा — "शादी बहुत ही खास जगह पर होगी।" लेकिन उसने यह नहीं बताया कि कहाँ होगी। यह सुनकर मालिनी का दिल पूरी तरह टूट चुका था। अब वह घर से बाहर नहीं निकलती थी। किसी से बात भी नहीं करती थी।

हर पल बस ओंकारा के बारे में ही सोचती। वह सोचती कि आखिर उसकी क्या गलती थी। उसे लगा था कि ओंकारा उससे प्यार करता है, लेकिन मालिनी को ओंकारा की बहुत याद आ रही थी। वह उसे रोज़ याद करती थी, पर आज कुछ अलग था।

पता नहीं क्यों उसका दिल ओंकारा से मिलने के लिए उसका दिल पता नहीं क्यों तड़प उठा और उसने तय किया कि वह शायद शिव मंदिर में उसे देख पाएगी। मालिनी शिव मंदिर पहुँची। यह सोचकर उसने देखा कि मंदिर पूरी तरह से सजा हुआ था। वह शिव मंदिर, जहाँ कोई आता-जाता भी नहीं था, आज विवाह के मंडप और लोगों से भरा हुआ था। सचमुच मंदिर में बहुत भीड़ थी। मालिनी समझ नहीं पा रही थी कि यह सब क्या हो रहा है। उसने आगे बढ़कर देखा कि वहाँ तो सच में विवाह का कार्य-क्रम चल रहा था।

मालिनी ने देखा कि एक दूल्हा और दुल्हन शिव जी के सामने बैठे हैं और हाथों में हाथ डालकर विवाह की कसमें ले रहे हैं। मालिनी चुपचाप मंदिर के बाहर खड़ी रही।

उसने गौर किया कि मंदिर के बाहर रक्षक खड़े हुए थे वो ओंकारा के पिता ज़मींदार राज सिंह के आदमी थे। मालिनी ने मंदिर में मौजूद सभी लोगों को देखा ओंकारा का परिवार भी वहाँ मौजूद था। मालिनी ने सोचा और देखा कि ओंकारा भी वहाँ था। "इसका मतलब, ओंकारा यहाँ शादी कर रहा है, और उसने मुझे बताया भी नहीं।" मालिनी ने देखा कि ओंकारा उस लड़की के साथ फेरे ले रहा है। किसी और के साथ उसे अग्नि के फेरे लेते हुए देखकर मालिनी को उसका दिल उस हवन-कुंड की आग की तरह ही जलता हुआ महसूस हुआ।

"इश्क एक तितली है,

सुंदर, रंगीन और मनमोहक।

दूर से देखा तो पास जाने का

दिल चाहता है।

पास जो जाओ तो

दिल छूकर

और जब पास जाते हैं

तो दिल छूकर महसूस

करना चाहते हैं

और जब जाता है तब

तब बढ़ा तड़पाता है।

उस लड़की के साथ सात फेरे लेने के बाद पंडित जी के कहे अनुसार ओंकारा ने सिंदूर की डिब्बी उठाई। उसने चुटकी भर सिंदूर लेकर हाथ आगे बढ़ाया, उस लड़की की माँग भरने के लिए। लड़की ने घूँघट ओढ़ रखा था—ठीक वैसा ही, जैसा मालिनी ने अपने सपनों में देखा था।

यह सब उस समय हुआ जब लड़की के साथ फेरे लेने के बाद ओंकारा की नज़र मालिनी पर पड़ी। पंडित जी के कहने अनुसार ओंकारा ने सिंदूर उठाया और उस लड़की की माँग भरने के लिए हाथ आगे बढ़ाया। उस लड़की ने घूंघट ओढ़ रखा था। यह बिल्कुल वैसा ही था जैसा मालिनी ने अपने सपने में देखा था।

मालिनी अभी भी मंदिर के बाहर खड़ी थी। उसकी आँखों में आँसू थे जिन्हें वह चाहकर भी रोक नहीं पा रही थी। मालिनी भाग जाना चाहती थी, मगर उसके पैर हिलने का नाम ही नहीं ले रहे थे। उसने एक कदम मंदिर की तरफ बढ़ाया। ओंकारा को मालिनी की नज़दीकियों का अहसास हुआ। उसने बाहर देखा और जैसे ही मालिनी को वहाँ खड़ा देखा, ओमकारा के हाथ से सिंदूर का डिब्बा छूटकर नीचे गिर गया। ओमकारा ने मालिनी की आँखों में देखा, दोनों की आँखों में आँसू भर आए। ओमकारा मंदिर से बाहर आया और मालिनी के पास जाकर उसका हाथ पकड़ लिया। फिर वह उसे मंदिर के भीतर ले गया और शिव जी के सामने खड़ा कर दिया। ओमकारा लगातार मालिनी की आँखों में देखता रहा, मानो यह जानना चाहता हो कि उसके दिल में क्या चल रहा है।

उसके दिल में क्या है, यह पूछे बिना ही जब उसे मालिनी की दिल की बात समझ। उसने शिव जी को देखा और मंदिर में रखी सिंदूर की डिब्बी उठाई। फिर मालिनी की माँग में सिंदूर भर दिया। मालिनी की आँखों से आँसू बहने

लगे। मालिनी ने ओमकारा को गले लगा लिया। मालिनी की आँखों से आँसू रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। ओमकारा के परिवार वालों ने उन्हें रोकने की कोशिश की, लेकिन पंडित जी ने समझाया कि अगर भगवान शिव की मर्ज़ी न हो तो एक पत्ता भी नहीं हिलता। पंडित जी ने ओमकारा के पिता और माता को समझाया कि उन्होंने ओमकारा की शादी किसी और लड़की से तय की थी।

ओमकारा की शादी उस लड़की से भी तय की जा रही थी, लेकिन वह कार्य सफल नहीं हुआ। क्योंकि नियति में जो लिखा होता है, वही होता है। भगवान शिव अपने भक्तों को कभी निराश नहीं करते। जो चीज़ उनके भक्तों के लिए उचित होती है, वही उन्हें मिलती है। इतनी कठिनाइयों के बाद भी ओमकारा और मालिनी का मिलना इस बात का प्रमाण है कि यह जोड़ी स्वयं भगवान शिव ने तय की है। पंडित जी की बात सुनकर ओमकारा के परिवार वाले भी शांत हो गए और उन्होंने समझ लिया। ओमकारा ने मालिनी को देखा। मालिनी की आँखें अभी भी नम थीं। उसने आगे बढ़कर मालिनी को गले लगाया। यह पहली बार था जब मालिनी ने ओमकारा को सपनों में नहीं, बल्कि हकीकत में गले लगाया था।

ओमकारा ने मालिनी को गले लगाया और कहा, "अब रोना बंद करो। सुना नहीं, पंडित जी ने क्या कहा…? उन्होंने कहा था, "मैं तुम्हारे लिए सही हूँ। मालिनी ने कहा, "नहीं, उन्होंने कहा था कि हम दोनों एक-दूसरे के लिए सही हैं। ओमकारा ने मालिनी की बात सुनकर सिर हिलाया। फिर दोनों ने मिलकर हाथ जोड़कर भगवान शिव का धन्यवाद किया।